स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

DEENDAYAL PORT TRUST
1964

आज़ादी का अमृत महोत्सव

दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट

(भारत का नं. 1 महापत्तन)

स्वस्थ रहें, सुरक्षित रहें,

21वाँ अंक
जनवरी, 2021 - जून, 2021

लहरों का राजहंस

दिनांक 14 सितंबर 2021 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित हिंदी दिवस 2021 के भव्य समारोह में दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री संजय कुमार मेहता जी ने माननीय केंद्रीय गृह राज्य मंत्रीगण के करकमलों से वर्ष 2019-20 (द्वितीय) और 2020-21 (तृतीय) के राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त किये ।

दिनांक 21 से 23 जनवरी, 2021 के दौरान टेंट सिटी, धोरडो, कच्छ, गुजरात में माननीय केंद्रीय पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री मनसुख मांडविया जी की अध्यक्षता में मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों और महापत्तनों के प्रमुखों की सहभागिता में व्यापक और गहन विचार मंथन हेतु दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के समन्वय में पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय द्वारा आयोजित तीन दिवसीय 'चिंतन बैठक' के कुछ विहंगम दृश्य ।

अध्यक्ष महोदय का सन्देश

श्री संजय कुमार मेहता
भा.व.से.
अध्यक्ष, दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट

प्रिय साथियों,

दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट की हिंदी गृह पत्रिका ''लहरों का राजहंस'' के इक्कीसवें अंक के माध्यम से पुन: आप सभी से मिलते हुए अत्यंत हर्ष एवं आनंद की अनुभूति हो रही है। दीनदयाल पोर्ट राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु सदैव प्रयासरत रहता है। दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट को गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा लगातार दूसरे वर्ष 2020-21 के लिए अखिल भारतीय स्तर पर राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में सर्वोच्च पुरस्कार अर्थात् राजभाषा कीर्ति पुरस्कार के तहत भारत सरकार के बोर्ड/स्वायत्त निकाय/ट्रस्ट/सोसायटी आदि कार्यालयों की श्रेणी में भाषा-भाषी 'ख' क्षेत्र के लिए तृतीय पुरस्कार दिनांक 14 सितंबर 2021 को प्रदान किया गया है। साथ ही पोर्ट ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के स्तर पर भी राजभाषा शील्ड योजना के तहत वर्ष 2021 के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया है। इस उपलब्धि के लिए दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी सराहना के पात्र हैं। इसके अलावा दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट, कंडला/गांधीधाम की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) की अध्यक्षता के दायित्व को भी श्रेयस्कर ढंग से निभा रहा है और नगर में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालय नराकास की गतिविधियों में अपना योगदान देकर इसके उद्देश्य के गठन को पूरा करने में अपना सहयोग दे रहे हैं।

दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट ने गत वर्ष की संगत अवधि की तुलना में 15.35% की वृद्धि दर्ज़ करते हुए नवंबर, 2021 तक 85.195 मिलियन मीट्रिक टन कार्गो हैंडलिंग के आंकड़े को पार करते हुए सभी महापत्तनों में अपनी नंबर एक की स्थिति को बनाए रखा है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि पोर्ट के अधिकारियों, कर्मचारियों और प्रयोक्ताओं सहित सभी के संगठित प्रयासों से हम न केवल इस वर्ष भी इस उपलब्धि को बनाये रख पाने में सक्ष्म होंगे बल्कि इसे और अधिक ऊँचे स्तर तक ले जा पाएंगे और देश की आर्थिक प्रगति में अपने संगठन की ओर से बहुमूल्य योगदान भी कर पाएंगे।

मुझे यह कहते हुए गर्व का अनुभव होता है कि दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट अपने सामाजिक और राष्ट्रीय दायित्वों का बखूबी निर्वहन कर रहा है। दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के प्रयासों को हर पटल पर सराहा गया है। इसके लिए मैं आप सभी को बधाई देता हूं। दीनदयाल पोर्ट के अनवरत विकास और उत्कृष्टता को बनाए रखने का संकल्प आप सभी की सक्रिय भागीदारी से ही संभव है। यह आवश्यक है कि हम सभी एक जुट होकर दीनदयाल पोर्ट की समृद्धि, प्रगति और निरंतर विकास में सक्रिय रूप से सहभागी बने। अंत में, हिंदी गृह पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सफल प्रयासों की मैं सराहना करता हूं और उन्हें बधाई देता हूँ, साथ ही आशा करता हूं कि पत्रिका अपने प्रकाशन के उद्देश्य में सफल सिद्ध होगी।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

जय हिन्द।

उपाध्यक्ष महोदय का सन्देश

श्री नंदीश शुक्ल, आई.आर.टी.एस.
उपाध्यक्ष
दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट

दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट की छमाही हिंदी गृह पत्रिका ''लहरों का राजहंस'' के इक्कीसवें अंक के माध्यम से पुन: आप सभी से संवाद स्थापित करते हुए अत्यंत हर्ष एवं आनंद की अनुभूति हो रही है। दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में हमेशा अग्रणी बने रहने का प्रयास करता रहा है, पत्रिका का प्रकाशन इस प्रयास का एक अभिन्न अंग है। हिंदी गृह पत्रिका के माध्यम से पोर्ट में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी रचनाधर्मिता लोगों के समक्ष प्रस्तुत करने का मंच प्राप्त होता है, साथ ही अपना मौलिक साहित्य सृजित करने की प्रेरणा भी मिलती है। कोविड-19 के प्रभाव के परिणामस्वरूप पत्रिकाओं को हार्ड कॉपी के बजाय डिजिटल प्रारूप में ई-बुक इत्यादि के रूप में प्रकाशित करने के सरकारी निर्देश के अनुपालन में इस अंक को भी ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। सभी पाठकगण इसे दीनदयाल पोर्ट की आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर पढ़ सकते हैं। ई-पत्रिका के रूप में हिंदी पत्रिकाओं की उपलब्धता से इंटरनेट पर हिंदी की विषयवस्तु में अत्यधिक बढ़ोत्तरी हो सकेगी।

दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से लगातार दूसरे वर्ष 2020-21 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन हेतु भारत सरकार के बोर्ड/स्वायत्त निकाय/ट्रस्ट/सोसायटी आदि कार्यालयों की श्रेणी में ''ख'' क्षेत्र में ''राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (तृतीय)'' दिनांक 14 सितंबर 2021 को प्रदान किया गया है और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के स्तर पर भी राजभाषा शील्ड योजना के तहत 2021 के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त होने पर पोर्ट के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी प्रशंसा के पात्र हैं। कंडला/गांधीधाम क्षेत्र की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षरा का दायित्व का निर्वहन भी दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट द्वारा भलीभांति सफलतापूर्वक किया जा रहा है।

दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सहयोग से ही पोर्ट में राजभाषा नीति का शत-प्रतिशत सफल कार्यान्वयन संभव है। इस कार्य में पोर्ट के अधिकारी और कर्मचारी पहले से ही अपना योगदान करते आ रहे हैं। मुझे आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि पोर्ट के कामकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए अपने संवैधानिक उत्तरदायित्व को समझते हुए सभी अधिकारी और कर्मचारी अपना योगदान आगे भी बढ़-चढ़ कर देते रहेंगे। इस पत्रिका के माध्यम से पोर्ट के अधिकारी, कर्मचारी और उनके परिजन अपनी मौलिक सृजन क्षमता को सबके साथ साझा कर सकते हैं और एक-दूसरे के विचारों को जान-समझ सकते हैं।

मै, पोर्ट के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से अपील करूँगा कि अपने दैनिक कार्यालयीन कामकाज में अधिक से अधिक राजभाषा हिंदी का प्रयोग करते हुए एवं तत्संबंधी सभी नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करते हुए संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में किये जा रहे दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के प्रयासों को मजबूती प्रदान करें ताकि हमारे प्रयासों को मान्यता प्राप्त हो सके और आने वाले वर्षों में भी पुन: दीनदयाल पोर्ट को मंत्रालय एवं राष्ट्रीय स्तर पर राजभाषा पुरस्कार प्राप्त हो सके। इस अंक में अपनी रचनाधर्मिता का उदाहरण पेश करने वाले एवं प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का अभिनंदन करते हुए आप सभी को बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएँ

जय हिंद,

सचिव महोदय का सन्देश

श्री सी. हरिचंद्रन
सचिव
दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट

दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट की हिंदी गृह पत्रिका ''लहरों का राजहंस'' के इक्कीसवें अंक के माध्यम से आप सब के सम्मुख अपनी बात पुन: रखते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है । मुझे यह बताते हुए गौरव का अनुभव हो रहा है कि दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट की इस वर्ष का राष्ट्रीय स्तर का राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (तृतीय) के साथ-साथ नराकास राजभाषा शील्ड योजना का प्रथम पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है । हिंदी गृह पत्रिका का प्रकाशन दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट की नियमित गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण अंग है जो राजभाषा कार्यान्वयन की गति को तीव्रता प्रदान करती है । आशा है कि पिछले अंकों की तरह यह अंक भी आप सभी को अच्छा लगेगा और आप सभी इसे सराहेंगे ।

केंद्र सरकार के पोत परिवहन मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त निकाय होने के नाते दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट भारत सरकार द्वारा लागू सभी नीतियों का अनुपालन करना अपनी सांवैधानिक जिम्मेदारी समझता है और भारत सरकार की राजभाषा नीति का कार्यान्वयन जिम्मेदारीपूर्वक निष्पादित कर रहा है । जैसा कि अवगत है कि संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी को अपनाया गया है अत: हम सबको अपना कार्य यथासंभव हिंदी में करना चाहिए ताकि संविधान की मूल भावना का पालन हो सके । कहने की आवश्यकता नहीं है कि जनता की भाषा में सरकारी कामकाज करने से विकास की गति और तेज होगी और पारदर्शिता आयेगी ।

राजभाषा हिंदी में सरकारी कामकाज को बढ़ावा देने के लिए सरकार की नीति प्रेरणा और प्रोत्साहन की रही है, जिसका अक्षरश: अनुपालन दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट में भी हो रहा है । अभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट में भी कई प्रोत्साहन योजनायें लागू हैं। इसके अलावा हिंदी दिवस/पखवाड़ा का आयोजन, नियमित हिंदी प्रशिक्षण कार्यशालओं का आयोजन के साथ-साथ लेखन आदि के क्षेत्र में रुचि रखने वाले दीनदयाल पोर्ट के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिजनों के लिए अपनी सृजनात्मक क्षमता का सार्वजनिक स्तर पर प्रदर्शन कर पाने में सहायता हेतु हिंदी गृह पत्रिका का छमाही प्रकाशन भी किया जाता है । इन सब का उद्देश्य दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देना है । दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट कंडला/गांधीधाम क्षेत्र की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अधयक्षता के दायित्व का भी बदूबी निर्वहन कर रहा है ।

दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर रहा है तथापि इस क्षेत्र में सतत प्रयास जारी रखने की आवश्यकता है ताकि दीनदयाल पोर्ट राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में शीर्षतम बिंदु को भी स्पर्श कर सके । मुझे पूर्ण विश्वास है कि यदि दीनदयाल पोर्ट के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी अपने सक्रिय एवं समर्पित प्रयास करेंगे तो यह अवश्य संभव हो सकेगा मैं आप सभी से अनुरोध करूँगा कि अपने दैनिक कार्यालयीन कामकाज में अधिक से अधिक राजभाषा हिंदी का प्रयोग करते हुए एवं तत्संबंधी सभी नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करते हुए संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में किये जा रहे दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के प्रयासों को मजबूती प्रदान करें ताकि हमारे प्रयासों को मूल्यांकन के सभी स्तरों पर मान्यता और सम्मान प्राप्त होता रहे । इस अंक में अपनी रचनाधर्मिता का उदाहरण पेश करने वाले एवं प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का अभिनन्दन करते हुए आप सभी को पुनश्च बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएँ ।

जय हिन्द,

लहरों का राजहंस

21वाँ अंक
जनवरी 2021 – जून 2021

संरक्षक

श्री संजय कुमार मेहता, भा.व.से.,
अध्यक्ष

उप-संरक्षक

श्री नंदीश शुक्ल, आई.आर.टी.एस.
उपाध्यक्ष

मार्गदर्शक मंडल

श्री सी. हरिचंद्रन, सचिव
श्री आर. मुरुगादास, मुख्य अभियंता
श्री जी.आर.वी. प्रसाद राव, यातायात प्रबंधक
श्री बी. भाग्यनाथ, वि.स. एवं मु.ले.अ.
श्री प्रदीप महान्ति, उप संरक्षक
डॉ. अनिल चेलानी, मुख्य चिकित्सा अधिकारी

संपादक

श्री शैलेन्द्र कुमार पाण्डेय, वरिष्ठ सहायक सचिव

उप-संपादक

डॉ. महेश बापट, वरि. उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी
श्री ओम प्रकाश दादलानी, जनसंपर्क अधिकारी
श्री राजेश रोत, उप सामग्री प्रबंधक

सहायक संपादक मंडल

श्री वेदरुचि आचार्य, सहायक प्रशासनिक अधिकारी
श्री राजेन्द्र पाण्डेय, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक
श्री नरेशचंद्र पाण्डेय, हिन्दी अनुवादक

सम्पादकीय

शैलेन्द्र कुमार पाण्डेय
वरिष्ठ सहायक सचिव एवं
संपादक, लहरों का राजहंस

दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट की हिंदी गृह पत्रिका ''लहरों का राजहंस'' का इक्कीसवां अंक भी राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार आपके सम्मुख ई-पत्रिका के रूप में प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। इसे आप दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट की वेबसाइट और राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर जाकर पढ़ और डाउनलोड कर सकते हैं। कोविड-19 महामारी का प्रकोप निरंतर जारी है। सभी के स्वस्थ और सुरक्षित बने रहने की कामना है। महामारी का असर राजभाषा कार्यान्वयन की गतिविधियों पर भी पड़ा है। तथापि, हमारे प्रयास अनवरत जारी रहे और इस चुनौतीपूर्ण समय में भी आगे बढ़ने के दृढ संकल्प के साथ हम सभी सतत प्रयत्नशील हैं।

हिंदी गृह पत्रिका ''लहरों का राजहंस'' के माध्यम से दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट में सेवारत अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिजनों की रचनात्मकता एवं उनके विचारों का प्रवाह आप सबके सामने प्रस्तुत किया जाता है। साथ ही पत्रिका का प्रकाशन दीनदयाल पोर्ट में संघ सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के तहत हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के लिए उठाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण कदम भी है।

दीनदयाल पोर्ट, राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप प्रदर्शन कर रहा है। सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के एकजुट प्रयासों से दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट ने लगातार दूसरे वर्ष राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2020-21 के लिए ''राजभाषा कीर्ति (तृतीय)'' पुरस्कार प्राप्त किया। साथ ही, नराकास स्तर पर भी वर्ष 2020 के लिए भी लगातार तीसरे वर्ष प्रथम पुरस्कार की राजभाषा शील्ड और प्रमाणपत्र प्राप्त किया। अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रेरित और प्रोत्साहित करने के लिए कई प्रोत्साहन योजनायें लागू हैं, जिनमें पर्याप्त संख्या में सहभागिता की जा रही है। दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सहयोग से ही पोर्ट में राजभाषा नीति का शत-प्रतिशत सफल कार्यान्वयन संभव है। आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करने में पोर्ट की संवैधानिक जिम्मेदारी के निर्वहन में पोर्ट के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों का योगदान आगे भी बढ़-चढ़ कर मिलता रहेगा। इस पत्रिका के माध्यम से अधिकारी, कर्मचारी और उनके परिजन अपनी मौलिक सृजन क्षमता को साझा कर सकते हैं और एक दूसरे के विचारों को जान-समझ सकते हैं।

सरकारी/सरकार नियंत्रित कार्यालयों में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी अधिकारियों के स्तर से लेकर कर्मचारियों के स्तर तक होना अपेक्षित है। अत: सभी अधिकारियों से विनम्र अनुरोध है कि राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति पर निगरानी रखना एवं अधीनस्थ सहकर्मियों को अपने दैनिक कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए प्रेरित, प्रोत्साहित करना एवं उत्तरदायी बनाना भी अत्यावश्यक है। दीनदयाल पोर्ट में कार्यरत प्रत्येक अधिकारी और कर्मचारी से विनम्र अनुरोध एवं आग्रह है कि अन्य क्षेत्रों की तरह ही राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी अपना सर्वोत्तम योगदान एवं सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करते रहें ताकि संगठित एवं एकजुट प्रयास से प्रबंधतंत्र की अपेक्षानुसार राजभाषा कार्यान्वयन के शीर्षस्थ बिंदु को आगे भी स्पर्श किया जा सके।

सतत सहयोग हेतु प्रबंधन के प्रति, साथ ही साथ सुविज्ञ एवं सुधी पाठकों के प्रति तथा अपनी रचनाएं देने वाले अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिजनों के प्रति हृदय तल से आभार प्रकट करते हुए आप सभी को शुभकामनाएं देता हूँ।

अस्वीकरण : पत्रिका में लेखकों के अभिव्यक्त विचारों से पोर्ट ट्रस्ट एवं संपादक मंडल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।
पत्रिका में उल्लिखित नियम आदि के मूल पाठ को ही प्राधिकृत माना जायेगा।

अनुक्रमणिका

1.	टेंशनी	डॉ. महेश बापट	1
2.	ओस की बूँद	श्रीमती रानी कुकसाल	2
3.	आत्मनिर्भर भारत : अवसर, चुनौतियाँ एवं सफलता	श्रीमती मेरी विजयकुमार	3
4.	हरित क्रांति	श्रीमती कल्पना वी. महेश्वरी	8
5.	देशहित पहले है ना !	कु. हनी खिलवानी	9
6.	व्हाट्सअप कॉन्टेक्ट्स	श्री दिलीप के. शहाणी	10
7.	विश्वास	श्रीमती अंजू आहुजा	10
8.	हिंदी की विकास यात्रा	श्री गोपाल शर्मा	11
9.	हर विचार एक बीज है	श्री गोपाल शर्मा	11
10.	लाक्षागृह षडयंत्र	श्री दिनेश आई. भूत	12
11.	शब्द पहेली	श्री दिनेश आई. भूत	13
12.	संदर्भाधीन अवधि के दौरान गतिविधियों की झलकियाँ	----------	14-17
13.	जहाजी : व्यक्ति चित्र	डॉ. महेश बापट	18
14.	जिम्मेदारी	सुश्री दीक्षा राजपुरोहित	19
15.	काश	सुश्री दीक्षा राजपुरोहित	19
16.	अवचेतन मन	श्री रिषभ के. मातुरकर	20
17.	डिजिटल उपवास	कु. फातिमा बोहरा	22
18.	बिटिया	श्रीमती लता जे. दवे	22
19.	देश की धरोहर है बेटियाँ	श्रीमती ज्योति एन. भावनानी	23
20.	पथ का अंधियारा मिटाता चल	सुश्री मोनिका लोचानी	24
21.	चन्दा मामा	कु. श्रेया मिश्रा	24
22.	देश प्रेम	कु. प्रतीक भावनानी	25
23.	कल हो न हो	कु. चिराग निहलानी	26
24.	आओ हम किसान बन जाएँ	श्रीमती शकीना के. कुंभार	26
25.	दरारों के उस पार अपनी यादें	श्रीमती संगीता खिलवानी	27
26.	आज की नारी	श्रीमती रानी कुकसाल	28
27.	लास्ट बेंच	श्री महेश खिलवानी	29
28.	सच्चाई की डगर	श्रीमती ज्योति एन. भावनानी	30
29.	महामारी : एक प्रतिबिंब	श्रीमती रीना विसारिया रोशिया	30
30.	नया वर्ष नया सवेरा	श्रीमती आरती निहलानी	31
31.	सावन आया, सावन आया	श्रीमती आरती निहलानी	31
32.	मुन्ना	श्रीमती रानी कुकसाल	32
33.	निगोड़ी टीवी	श्रीमती रानी कुकसाल	35
34.	राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी	----------	35

टेंशनी

डॉ. महेश बापट
वरिष्ठ उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी

ओ टेंशनी इधर इसका क्या करना है ? अब टेंशनी इसको कैसे करना है बता दो ना ? सुबह से इस तरह के वाक्य सुन-सुनकर मेरे कान पक गए थे । फिर मैंने सुरेश भाई को पकड़ा और पूछा तुम टेंशनी क्यों बोल रहे हो इसका नाम टेंशनी है क्या ? सुरेश भाई हंसने लगे । उन्होंने कहा इसका नाम तृष्णा है लेकिन इसके स्वभाव की वजह से इसे बचपन से ही टेंशनी कहकर पुकारा जाता है । अभी हमारी बातचीत शुरू हुई थी कि टेंशनी के पति विनोद जो हमारी बातचीत थोड़ी बहुत तो सुन चुके थे, आ गए । बड़े मजाकिया किस्म के आदमी हैं, तपाक से बोले, अरे साहब जब यह पैदा हुई थी तो बहुत टेंशन में थी कि मैं यहां क्यों आई ? कैसे आई ? तबसे इसका नाम पड़ गया टेंशनी । तब तक और भी दो-चार लोग चर्चा में जुड़ चुके थे । कुल मिलाकर यह समझ में आया कि हर छोटी मोटी बात का तृष्णा को टेंशन हो जाता है और उसका कोई विकल्प ही नहीं है । उसे टेंशन करने देना यही सही स्थिति होगी अगर कभी इस टेंशनी ही को टेंशन ना हुआ तो पूरा परिवार ही टेंशन में आ जाएगा ।

मैंने देखा टेंशनी ही अपने बेटे कुणाल को कुछ जबरदस्ती खिला रही थी । कुणाल 7 साल का है । ऐसे टहलते हुए मैं टेंशनी के पा जा खड़ा हुआ और मैंने उससे पूछा कि यह तुम जबरदस्ती उसे क्यों खिला रही हो? क्या बताऊं भाई साहब मुझे तो बहुत टेंशन हो गया है आज सुबह से पॉटी नहीं गया । अरे आ जाएगी उसे अभी सात ही तो बजे हैं । थोड़ा देर खेलेगा । अपने आप ही उसे टेंशन आ जाएगा । मैंने मजाक में कहा लेकिन मेरी बात सुनकर भी अनसुनी कर टेंशनी कुणाल को खिलाती रही।

मुझे याद आया शर्मा जी के घर का प्रसंग अभी 10 दिन पहले की तो बात है उनकी बहू भी कुछ इसी तरह टेंशन वाली है, दोनों बच्चों का आशीर्वचन समारोह था, बहू को मेकअप करने मेकअप वाली दो बहनें आई थीं, देर बहुत हो चुकी थी, बहू तैयार ना हो पाई थी । समय पर कोई काम ना करना, फिर जल्दबाजी, हड़बड़ी और फिर गड़बड़ी यह तीनों इसी क्रम में आते हैं । बच्चे भी तैयार नहीं थे । बहू ने दोनों बच्चों को चूड़ीदार पजामा पहनाने के लिए मेकअप वाली बहनों में से एक को कहा जैसा कि अक्सर होता आया है, चीजें जब बिगड़ना शुरू होती हैं तो एक साथ सारी चीजें बिगड़नी होती हैं, मेकअप आर्टिस्ट ने जल्दी-जल्दी में छोटेभाई का चूड़ीदार बड़े भाई को पहना डाला । घुटने तक जाकर चूड़ीदार अटक गया । ना उसे बाहर निकाल पा रहे थे ना उसे चढ़ा पा रहे थे और इसलिए छोटे भाई को भी तैयार करना बड़ा मुश्किल था । एक बहुत ही मजाकिया माहौल वहां पर खड़ा हो गया । मेहमानों में से जब 4-6 लोग उनकी मदद में लगे तब कहीं जाकर चूड़ीदार को बिना काटे उतारा जा सका जल्दी भी थी और लोग मजे भी ले रहे थे । टेंशन काफी बढ़ चुका था । बहू तो हद से बाहर टेंशन में बड़बड़ाने लगी थी ।

एक हमारी दीदी है उसे उसके बच्चों का टेंशन हो जाता है । बच्चे क्या पढ़ाई करेंगे, कैसे पढ़ाई करेंगे ? हालांकि दोनों बच्चे बहुत ही होशियार हैं । दोनों मेहनती हैं । बड़ा बेटा इंजीनियरिंग कर रहा है और छोटी बेटी मेडिकल । दोनों का ही कॉलेज और हॉस्टेल दोनों बढ़िया हैं । लेकिन दीदी है कि अब वह मेस में खाना कैसे खाएंगे और उन्हें कैसे अच्छा लगेगा इस बात पर हलकान हो रही है । हालांकि दोनों ही बच्चे खाने पीने के बारे में

बिल्कुल भी नखरा नहीं करते । जब वह घर पर थे तो अव्वल नंबर कैसे लाएंगे इसका टेंशन था । अब जब वह अपनी कूवत दिखा चुके हैं तो अब वह घर से बाहर चले गए हैं, मैं उनके साथ रह ही नहीं पाई, इस बात का टेंशन है ।

आजकल हमारी श्रीमती जी लगभग रोज ही बिना मांगे शाम के भोजन के बाद कॉफी बना कर पेश कर देती हैं । कुछ दिनों तक तो मैं इस अप्रत्याशित बदलाव को बिल्कुल ही समझ ना पाया । लगा इस उम्र में पति पर कुछ ज्यादा प्रेम आने लग जाता है । अब पता पड़ रहा है कि बाजू वाले गुप्ता जी,जो रात बे रात कॉफी पीने के शौकीन थे, और मिसेज गुप्ता जो शायद नींद में रही होंगी उन्हें कॉफी ना पिला पाई । वे बिना कॉफी पिए ही चल बसे । तब से हमारी श्रीमती जी को टेंशन है कि मैं कॉफी पिए बिना ही कूच ना कर जाऊं ।

स्त्रियों को होने वाले टेंशन का तो हम बाकायदा प्राथमिकता के आधार पर वर्गीकरण कर सकते हैं । कामवाली बाई के ना आने का टेंशन, आने के बाद कुछ काम ना करने का टेंशन, कभी-कभी बाई के समय से पहले आ जाने का टेंशन । पड़ोसी महिलाओं के नए वस्त्र, नई वेशभूषा, नए गहने के लेटेस्ट डिजाइन के होने का टेंशन, पड़ोसियों के बच्चों के सफलता प्राप्त करने का टेंशन, अपने बच्चों के स्मार्ट ना होने का टेंशन, अंग्रेजी में बोलते आने का टेंशन, पति और बच्चों की गलत अंग्रेजी का टेंशन । बाप रे बाप । इस लिहाज से पुरुषों को बहुत कम टेंशन पालने पड़ते हैं । उनको तो पत्नी के घर में होने के टेंशन से हमेशा अटेंशन में रहना पड़ता है ।

कुणाल बड़े गौर से एक आंटी को इधर-उधर टहलते हुए देख रहा था उसके दिमाग में कुछ टेंशन था जरूर, अचानक वह उस आंटी से बोला-आंटी आपको टेंशन नहीं आया है क्या सुबह से ? कुछ खा लीजिए आपको टेंशन हो जाएगा उसकी इस मासूम बात पर भौचक्का होकर सब लोग खिलखिला कर हंस पड़े ।

ओस की बूँद

श्रीमती रानी कुकसाल
वरिष्ठ लिपिक, विद्युत प्रभाग

बादलों की ओट से ताके बूँद ओस की, मन में है सोचती बादलों की ओट से,
कहाँ जाऊं कौन-सा जनम लूँ, जगत में कहाँ जाऊं, कौन-सा जनम लूँ जगत में,
मैं भी कुछ काम आऊं जिंदगी में और भी बादलों की ओट से ।

गिरूं जो मैं सीप में तो मोती बन जाऊंगी, ललना की देह में चढ़ इतराऊंगी,
लाखों में वारी जाऊं सबको ललचाऊंगी, कलुषित नज़रिया जो ललना पे जाएगी,
ऐसे में कैसे मैं उसको बचाऊंगी, ना ना ना ना ना मैं तो मोती ना बन पाऊंगी,
सीप में ना जाऊंगी बादलों की ओट से ।
फूल पे गिरूं तो ये फूल खिल जाएगा, बगिया से टूट के ये देव पे चढ़ जाएगा,
ललना के गजरे में प्रेम से बिंध जाएगा, नेता की जीत में जश्न मनाएगा,
पर अगले ही पल फिर रौंद दिया जाएगा, ना ना ना ना ना जीवन व्यर्थ ना गवाऊंगी,
फूल में ना जाऊंगी बादलों की ओट से ।

गिरूं जो जा के भुजंग के मुख में, गिरते ही मुख में गरल बन जाऊंगी,
ओस जैसी नाजुक बिटिया के तन को, पापी नितुर की नजर से बचाऊंगी,
पापी की नस नस में बिष बन जाऊंगी,
भुजंग मुख जाऊंगी ओस की ये बूँद, झूमे वृहद् उमंगों में सोचती है मन में,
धन्य धन्य धन्य भयी कि इस भव में धन्य धन्य धन्य मैं,
बादलों की ओर से ताके बूँद ओस की, मन में है सोचती बादलों की ओट से ।

आत्मनिर्भर भारत

आत्मनिर्भर भारत अवसर, चुनौतियाँ एवं सफलता

श्रीमती मेरी विजयकुमार
वरिष्ठ लिपिक
सिविल अभियांत्रिकी विभाग

प्रस्तावना :

''**सर्व परवशं दुःखम् सर्वमात्मवश सुखम्**'' अर्थात् सब तरह से दूसरों पर निर्भर रहना ही दुःख है तथा सब प्रकार से आत्मनिर्भर होना ही सुख है। कोई भी चीज अचानक आत्मनिर्भर नहीं हो जाती, तो इसका सीधा सा मतलब यह है कि, आनेवाले समय में हम भारत को आत्मनिर्भर बनाने वाले हैं। भारत अगर प्रगति करता है तो वह दुनिया की प्रगति में भी अपना योगदान देता है। 'भारत को उस बाज की तरह ऊँची उड़ान भरनी है जो कि सबसे ऊपर पहुँच कर भी हर जीव पर नजर रखता है'।

आत्मनिर्भर भारत का अर्थ :-

निर्भरता अर्थात् : आनेवाले समय में कुछ आवश्यकतायें होती हैं, ये आवश्यकतायें चाहे वस्तु की हों या सेवा की हों, तब हम दूसरे व्यक्ति पर या देश पर निर्भर होते हैं। यह निर्भरता की स्थिति है।

आत्मनिर्भरता अर्थात् : वस्तु और सेवा की आवश्यकता हमें स्वयं के द्वारा पूर्ति करनी है। इसके लिए हम घरेलू (भारत की) स्तर पर उत्पादन करेंगे, स्वयं की आवश्यकतायें पूरा कर लेते हैं, उस स्थिति को ही हम आत्मनिर्भरता की स्थिति कहते हैं। हमें अपनी वस्तुओं और सेवाओं की गुणवंता (ट्रेड-मार्क) इस स्तर पर करना है कि लोग उसे खरीदें और उसे चुनें।

अवसर : आज पूरा विश्व कोरोना रुपी महामारी से लड़ रहा है यही वक्त है जब हम अपने इस आपदा को अवसर में बदल सकें। यह महामारी मकड़ी की जाल की तरह चारों ओर से घेरा हुआ है। ''**समस्या जीवन का प्रतीक है**''।

वर्ष 1991 में आर्थिक सुधार लागू हुए तो वैश्वीकरण से वस्तु और सेवा का एक देश दूसरे देश पर निर्भर होने लगे। भारत भी उसी स्थिति में था। कोविड आने से पहले भारत की आर्थिक वृद्धि शून्य पर जाने वाली थी। दो, तीन, चार कुछ कुछ क्षेत्रों मे तो नकारात्मक, और हुआ यह कि जैसे ही कोविड-19 महामारी आई तो जिन वस्तु और सेवा का हम आयात करते थे वे वस्तुएं और सेवाएं बंद होने लगीं। आयात रुक गया जिससे भारत देश की जो आर्थिक वृद्धि और अर्थव्यवस्था की गति की जो कसर बची हुई थी वह भी कोविड-19 आने के बाद पूरी हो गई। आत्मनिर्भर भारत होने की जरुरत हम को इसलिए पड़ी क्योंकि निर्भरता धीरे-धीरे बढ़ती गई। इसलिए मांग उठने लगी कि कैसे भी करके फिर से हर एक चीज को प्रोत्साहन दिया जाए, चाहे वह भारत का कृषि क्षेत्र हो, निर्माण क्षेत्र हो या निवेश हो, इन्हें फिर से गति दी जाए, जिससे भारत का फिर से उत्पादन शुरु हो जाए। जब तक आर्थिक वृद्धि नहीं होगी देश में नागरिक का कल्याण, खुशहाली नहीं हो सकता। इसके अतिरिक्त निम्नलिखित अवसर भी हैं:-

❀ भारत देश के वित्तीय संस्थानों का पिछड़ा हुआ होने के कारण। ❀ भारत की अर्थव्यवस्था का विश्व के दूसरे विकासशील देशों से एकीकृत न होने के कारण। ❀ कम पढ़ी-लिखी भारी जनसंख्या के कारण (कम साक्षरता दर) ❀ विदेशी पूंजी निवेश पर सरकारी रोक होने के कारण। ❀ शेयर बाजार में अनेक बड़े और छोटे घपले होने के कारण। इसलिए उपरोक्त अवसरों के कारण तथा पूरे आर्थिक वृद्धि को गति देने के लिए एक आर्थिक राहत पैकेज शुरु किया गया।

''आवश्यकता आविष्कारों की जननी है।''

यह पैकेज उन श्रमिकों के लिए है जो हर स्थिति में हर मौसम में देश वासियों के लिए परिश्रम करते हैं तथा यह हमारे देश के मध्यम वर्ग के लिए है।

- योजना का नाम : आत्मनिर्भर भारत अभियान
- किस के द्वारा आरंभ की गई : प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी
- योजना का प्रकार : केंद्र सरकार
- लाभार्थी : देशका प्रत्येक नागरिक
- उद्देश्य : समृद्ध और संपन्न भारत का निर्माण
- आरंभ की तिथि : 12 मई 2020
- पैकेज की धनराशि : 20 लाख करोड़ रूपए

इस रकम को एक छतरी की तरह सभी क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। इस राहत पैकेज में सभी क्षेत्रों की दक्षता (कुशलता) बढ़ेगी और गुणवत्ता भी सुनिश्चित (पूरा यकीन वाला) होगी। जिससे भारत कोविड महामारी से लड़ने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा और एक आधुनिक भारत की पहचान बनेगा। राहत पैकेज से भारत में लोगों को कामकाज करने की सुविधा उपलब्ध करायी जाएगी। आनेवाले समय में भारत अपनी जरुरत वाली वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में आत्मनिर्भर हो सकता है। मूल राशि केंद्र सरकार के द्वारा खर्च की जाती है।

प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना :

देश में कोरोना महामारी से तालाबंदी के कारण नाई की दुकानें, मोची, पान की दुकानें व धोबी की दुकानें, रेहड़ी-पटरी वालों की आजीविका पर सबसे ज्यादा असर पड़ा है। इस समस्या को खत्म करने के लिए प्रधानमंत्रीजी के द्वारा आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत एक नई योजना की घोषणा की गयी है।

प्रावधान :

इस योजना के अंतर्गत रेहड़ी-पटरी वालों को सरकार द्वारा लोन मुहैया कराया जाएगा। इस योजना के अंतर्गत यह छोटे सड़क विक्रेताओं को अपना काम फिर से शुरु करने में सक्षम बनाएगा। इस योजना के जरिये आत्मनिर्भर भारत अभियान को गति मिलेगी। **यह पांच आधार स्तंभों पर आधारित है।**

आत्मनिर्भर भारत अभियान

5 स्तंभ

अर्थव्यवस्था	अवसंरचना	प्रणाली	जनसांख्यिकी	मांग और आपूर्ति
अर्थव्यवस्था में कहा गया है कि जो हमारी अब अर्थव्यवस्था होगी वह वृद्धि करनेवाली नहीं, बल्कि तीव्र उछाल करने वाली होगी।	जो आधुनिक भारत की आधारशिला रख सके तथा विश्वस्तर पर कियाशील अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करने वाली जैसे कि सड़क और बिजली।	21वीं सदी की प्रणाली होगी जो पूर्णतया प्रौद्योगिकी पर आधारित होगी। चाहे वह लेनदेन हो या सरकार द्वारा सेवाएं देने की हो, इन सबको और सक्षम किया जाएगा।	जनसांख्यिकी बहुत कुशल होगी तथा आत्मनिर्भर भारत अभियान की ऊर्जा की स्त्रोत होगी।	मांग पूर्ति के चक्र से और क्षमता का पूर्ण तरीके से उपयोग किया जाएगा।

मांग और आपूर्ति का मतलब भारत की जनसंख्या सरकार और देश के उत्पादन कर्ताओं से मांग करेंगे और वे हमारे मांग के अनुरुप पूर्ति करेंगे। उदाहरण के तौर पर माना कि भारत सरकार ने मोबाईल बनाने के लिए प्रोत्साहित किया और उसने मोबाईल बनाना शुरु कर दिया लेकिन कोई खरीद नहीं रहा है उसकी कोई मांग ही नहीं है, तो एक तरफ उसकी पूर्ति की जाएगी और दूसरी तरफ उसकी मांग भी बढ़ायी जायेगी। इस तरह से मांग और पूर्ति का जो चक्र और क्षमता है, भारत उसका पूरा उपयोग करेगा।

ऐसा तो नहीं है कि, भारत एक या दो महिनों में आत्मनिर्भर बन जाएगा, इसलिए भारत को आत्मनिर्भर होने के लिए दो चरणों की जरुरत पड़ेगी । यह एक-एक चरण करके पूरा होगा, क्योंकि भारत के पास इतनी पूंजी नहीं है कि सब क्षेत्रों को एक साथ विकसित कर सके और भारत स्वयं से वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करने लगे ।

प्राथमिक चरण : इसमें चिकित्सा, वस्त्र, विद्युत, प्लास्टिक खिलौने जैसे क्षेत्रों को प्रोत्साहित किया जायेगा ताकि स्थानीय निर्माण और निर्यात को बढ़ावा दिया जा सके ।

द्वितीय चरण : इस चरण में रत्न एवं आभूषण, स्टील, फार्मा जैसे क्षेत्रों को प्रोत्साहित किया जायेगा ।

इसके अतिरिक्त सरकार ने 8 बड़े क्षेत्रों के लिए घोषणा की है । जो कि निम्नानुसार है :-

❀ खनिज ❀ रक्षा निर्माण ❀ हवाई क्षेत्र ❀ कोयला ❀ बिजली वितरण कंपनियां ❀ परमाणु उर्जा ❀ अंतरिक्ष क्षेत्र ❀ केंद्र शासित प्रदेश

नीचे दर्शाये गये क्षेत्रों में विशेष आर्थिक राहत पैकेज के द्वारा सुधार किया जाता है ।

कृषि प्रणाली : इसके लिए ग्यारह घोषणाएं की गई हैं, जिसके द्वारा किसानों की आय दुगुनी होना । सभी फलों और सब्जियों को कवर करने के लिए ऑपरेशन ग्रीन का विस्तार किया जाना । कृषि बिक्री सुधारों को एक नये कानून के माध्यम से लागू किया जाना जो अंतरराज्यीय व्यापार के लिए बाधाओं को दूर करेगा । किसान को सुविधात्मक कृषि उपज के माध्यम से मूल्य और गुणवत्ता का आश्वासन दिया जाना । ''स्वामी फंड'' धान उत्पादन योजना से संबंधित है ।

नियम और कानून : भारत के नियम और कानून को स्पष्ट और सरल किया जाना जिससे लोग आकर्षित होकर आत्मनिर्भर भारत के लिए उत्पादन करेंगे ।

नये व्यवसाय : नये व्यवसाय को प्रोत्साहित करना होगा जिससे पूंजी की कमी होने पर, भारत को निवेश को बढ़ाना होगा जिससे मेक इन इंडिया हो पायेगा ।

आत्मनिर्भर भारत अभियान के लाभार्थी :

देश के गरीब नागरिक, श्रमिक, प्रवासी मजदूर, पशुपालक, मछुआरे, किसान, संगठित क्षेत्र व असंगठित क्षेत्र के व्यक्ति, कुटीर उद्योग, मधुमक्खी पालन, मध्यमवर्गीय उद्योग, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय

चुनौतियां :- निम्न प्रकार हैं :-

कोरोना/कोविड-19 : कोरोना की महामारी में, भारत की खराब आर्थिक स्थिति और बेरोजगारी की समस्या की चुनौती हो गई है।

अमेरिका : बिना पैंदे का लोटा है, जो किधर भी लुढक जाता है, कभी इस देश को बचाता है तो कभी उसी देश के विरोध में होता है। यह भी एक चुनौती है ।

भारत - चीन के मध्य विवादित मुद्दे : चीन हमेशा मैकमोहन रेखा की अवमानना करता है । चीन द्वारा अरुणाचल प्रदेश पर अनुचित तरीके से अधिकार जताया जाता है । वर्ष 1962 में भारत - चीन युद्ध इसी का परिणाम है ।

भारत और पाकिस्तान के मध्य विवादित मुद्दे : पाकिस्तान जम्मू कश्मीर पर हमेशा से अधिकार जताता आ रहा है । विशेषकर जम्मू कश्मीर में हमेशा आतंकवादी गतिविधियों से कानून व्यवस्था पर प्रभाव डाल रहा है ।

सिंधु व सहायक नदी का जल बंटवारा ,

भारत व गुजरात सरक्रीक विवाद,

भारत-बांगलादेश के मध्य विवादित बिंदु : सीमा विवाद, तीन वीघा जमीन विवाद, न्यूमूर द्वीप विवाद, बांगलादेश चकमा घुसपैठियों से संबंधित विवाद आदि।

नेपाल सीमा विवाद :

भारत और श्रीलंका विवादित मुद्दे :-

भारत और श्रीलंका के बीच जलीय क्षेत्र को लेकर विवाद, मछुआरों का भारतीय आधिपत्य क्षेत्र में बिना अनुमति प्रवेश, श्रीलंका के उग्रवादी तमिल संगठन का प्रभाव भी भारतीय राज्यों में देखा गया है। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की हत्या लिट्टे द्वारा की गई थी।

इसके अलावा भी बहुत सी चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा जो कि निम्नलिखित हैं :-

- हमारे देश में आज भी जाति, धर्म, लिंग का भेदभाव बना हुआ है, जो हमारी तरक्की में सबसे बड़ा बाधक है। इसे दूर करना आवश्यक है।
- भारत के सभी व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध कराना एक बड़ी चुनौती है।
- गरीब व्यक्तियों के लिए कम दामों में भोजन उपलब्ध कराना और आर्थिक स्तर पर सरकारी मदद प्रदान करना।
- बेटियों की शादी करने से पहले उन्हें आत्मनिर्भर बनाया जाए, विशेष करके गाँव के क्षेत्रों में तथा गाँव-शहरों में लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अच्छी योजनाओं की शुरुआत करना। **''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ''** योजना को और आगे बढ़ाना चाहिए।
- किसानों की फसलों को सरकार द्वारा ज्यादा दाम में खरीदना तथा सरकार द्वारा किसानों को कृषि से संबंधित बीज, अन्य पदार्थों को कम दामों में उपलब्ध कराना और अपने देश में उन्नत किस्म के बीजों का प्रयोग में लाया जाए उससे खाद्यान्न का उत्पादन भरपूर मात्रा में करना आदि।
- हमारे देश में जितने भी पर्यटन स्थल है उन स्थलों को बहुत अच्छा बना करके अपने देश के पर्यटन उद्योग में विकास करना।
- वन के जानवरों को बचाने के लिए चिड़ियाघरों की संख्या को बढ़ाना।

''कोई भी संकट चुनौतियों के साथ संभावनाएं भी लाता है।''

इन चुनौतियों के समाधान हेतु भारत द्वारा निम्न समाधान किया जाना आवश्यक है। सीमा संबंधित विवादों को परस्पर सहयोग और उचित समझौतों से हल करने का प्रयास किया जाए। नदी जल विवादों में अन्य देशों से सन्धि वार्ता की जाए। आतंकवाद जैसी समस्याओं से निपटने के लिए भारत को कठोर व त्वरित कार्यवाही किया जाना आवश्यक है। सेना को प्रशिक्षित और उन्नत बनाना आदि।

उपरोक्त कदम उठाकर बाह्य सुरक्षा को उचित ढंग से स्थापित किया जा सकता है, और भारत की एकता, अखण्डता, संप्रभुता को बनाए रखा जा सकता है।

सफलता :

- **''सफलता जादू से नहीं, कौशल से मिलती है।''**
- **''भगवान उन्हीं की सहायता करता है जो खुद की सहायता करते हैं''**
- **''सफलता की राह में इच्छा नहीं इरादा होना चाहिए।''**
- **''सफल देश अपनी कमियों को पहचानता है और शक्तियों को बढ़ाता है।''**
- **''सफलता पर कोई लक्ष्मण रेखा नहीं खींच सकता, इसका कोई बंद दायरा नहीं हो सकता''**

भारत ने भयानक महामारी से लड़ने के लिए कई वस्तुओं का उत्पादन शुरु किया है, जैसे कि व्यक्ति गत सुरक्षा उपकरण, वातायन, मुखावरण, प्रक्षालक और रसीकरण आदि।

निम्नलिखित भारत की सबसे बड़ी परियोजनाएं है, जो सफलता की ओर जा रही हैं :-

सेतु भारतम् परियोजना : इसमें भारत के सभी राजमार्गों को आधुनिक बनाने का लक्ष्य है। रेलवे क्रॉसिंग से मुक्त करके यातायात की गति को बढ़ाना है।

बोगीबील ब्रिज परियोजना : रेलवे की इस परियोजना में अरुणाचल प्रदेश से तवांग को नॉर्थ ईस्ट के दूसरे राज्यों से जोड़ना यह इतना जोखिम भरा काम है कि अंग्रेजों ने भी इस जगह पर काम करने की हिम्मत नहीं दिखाई थी।

धोरेड़ा स्मार्ट सिटी परियोजना : जो अहमदाबाद से 40 कि.मी. दूर है।

अमरावती स्मार्ट सिटी परियोजना : आंध्रप्रदेश की राजधानी अभी हैदराबाद है। लेकिन जल्द ही आंध्रप्रदेश की पहचान बदलने वाली है। राजधानी अमरावती हो जाएगी जो आंध्रप्रदेश के गुंटूर जिले में है। वर्ष 2025 तक सफलता मिल जाएगी।

सोलर एनर्जी मेगा प्लांट : बिलजी की कमी पूरा करने के लिए भारत का सबसे बड़ा प्लांट है। इस पर हाल ही में भारत ने अमेरिका से समझौता किया है।

गुजरात गोरखपुर गैस पाइपलाइन परियोजना : भारतीय तेल निगम, आई.ओ.सी. गुजरात से गोरखपुर तक भारत की सबसे लंबी एलपीजी पाइप लाइन लगाई है।

चार धाम राजमार्ग विकास परियोजना : हिमाचल के सभी तीर्थ स्थलों को देश में चारों धामों से जोड़ने की योजना।

भारत माला परियोजना : यह गुजरात से मिजोरम तक आपस में जोड़ती है। महाराष्ट्र को पश्चिम बंगाल से सड़क नेटवर्क द्वारा जोड़ देगा। इसलिए इसका नाम भारत माला परियोजना रखा गया है।

नदी जोड़ परियोजना : ''तस्वीर तथा तकदीर बदल सकती है''।

भारत सरकार देश की सबसे बड़ी नदी जोड़ परियोजना पर तेजी से काम कर रही है। यह परियोजना के पूरा होने के बाद भारत में एक लम्बे जल मार्ग का विकास हो सकेगा जो दुनिया की सबसे लंबी नदी, नील नदी से दोगुना होगा। इस योजना के अंतर्गत 30 नदियों को एक दूसरे से जोड़ने का काम चल रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि इस परियोजना के बाढ़ तथा अकाल जैसी समस्याओं में राहत मिल सकेगी।

भारत का अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन :

अब भारत में **इसरो आत्मा है।** एक घटना ने पूरे देश को 100 सैकंड के अंदर जगा दिया और 100 सैकंड में पूरे भारत को जोड़ दिया। भारत की ओर से भेजा गया **मंगल यान,** मंगल की कक्षा में पहुंचने में कामयाब हो गया था और वहां स्थापित भी हो गया। मंगल मिशन में पहले प्रयास में ही सफलता पाने वाला भारत दुनिया का पहला देश बन गया। भारत के अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने कम संसाधनों में भी **चंद्रयान-1** को चांद पर भेजकर इतिहास रच दिया था, **एक साथ रिकॉर्ड 104 सैटेलाइट का प्रक्षेपण करके** भी भारत को विश्व के अंतरिक्ष बाजार में एक और उपलब्धि को प्राप्त कराया तथा कामयाब होने वाले देशों में भारत को विश्व में पहला देश बना दिया।

भारत बनेगा दुनिया का ''संकट मोचक'' WHO ने कहा भारत बन सकता है ''नजीर''। इसरो की सफलता देश के लिए बड़ा गौरव है। भारत की ताकत को दुनिया ने माना ''लोहा''। ग्लोबल फायर पावर की रिपोर्ट के अनुसार भारत दुनिया का चौथा ताकतवर देश है।

बुलेट ट्रेन की रफतार की तरह, नए भारत के बढ़ते कदम तथा संकल्प से समृद्धि की यह गौरव यात्रा पूरी होगी।

उपसंहार/निष्कर्ष : हम सहजता से मिल जाने वाले प्राकृतिक संसाधनों और कच्चे मालों के द्वारा वस्तुओं का निर्माण करके अपने आसपास के बजारों में इसे बेच सकते है। इससे हम स्वयं के साथ-साथ आत्मनिर्भर भारत की राह में अपना योगदान दे सकते हैं और हम सब मिलकर एक आत्मनिर्भर भारत निर्माण के सपने को मजबूत बनाने में सहयोग कर सकते हैं। तो आओ हम सब मिलकर अपने इस स्वाभिमानी आत्मनिर्भर भारत को बनाने का संकल्प पारित करें। हमें अपना हौसला बुलंद रखना होगा। स्वदेशी को हमें अपना जीवन-मंत्र बनाना होगा। ''जबरदस्ती से कराया गया काम कुछ वर्ष, लेकिन स्वेच्छा से किया गया काम उम्र भर चलता है।''

हरित क्रांति

श्रीमती कल्पना वी. महेश्वरी
श्रम निरीक्षक, यातायात विभाग

हरित क्रांति के फायदे और नुकसान

आज, बहुत से किसान हरित क्रांति के तहत आधुनिक कृषि पद्धतियों का अभ्यास कर रहे हैं, जो फसलों के बढ़ने के पारंपरिक तरीकों को बदलने के लिए सरकार द्वारा प्रेरित एक वैकल्पिक समाधान है। इसके मुख्य उद्देश्यों में खेती करना और अधिक कुशल बनाने, और पूरी दुनिया में भूख को नष्ट करना शामिल है। लेकिन इसके तरीकों के कारण, यह तकनीक गर्म बहस का विषय बन गया है कि क्या यह वास्तव में समाज के लिए बुरे की तुलना में अच्छा कर सकता है। इसके लिए अच्छी तरह से सूचित जवाब के साथ आने के लिए, अपने मुख्य लाभ और नुकसान को देखने के लिए सबसे अच्छा है।

हरित क्रांति के लाभों की सूची

1. यह बड़े पैमाने पर कृषि संचालन की अनुमति देता है।

हरित क्रांति ने बड़े पैमाने पर खेती की है पिछले कृषि क्षेत्र को देखकर,बड़ी मात्रा में उगाए जाने वाली फसलें केवल नहीं हैं जिनके लिए स्वस्थ होने के लिए व्यापक मानव हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है, जो यह इतना आसान नहीं था। लेकिन अब, हमने चीजों को आसान बना दिया है, जहां छोटे खेती समुदाय द्वारा भी एक औद्योगिक पैमाने पर अधिक फसलें उगाई जा रही हैं।

2. इसमें कहीं भी किसी भी फसल को विकसित करने में सक्षम होने की क्षमता है। यह अभिनव खेती प्रक्रिया कृषि के लिए लगभग हर जगह की जा सकती है। हालांकि आप अभी भी समुद्र तट पर आलू नहीं विकसित कर सकते हैं, आप इसके साथ फसल उगने के लिए अधिकांश प्रकार के इलाके या जमीन का उपयोग करने में सक्षम होंगे। इसका मतलब यह है कि किसानों को सबसे उपजाऊ भूमि की ज़रूरत नहीं है क्योंकि वे हर चीज को पूरा करने में सक्षम हैं, क्योंकि हरित क्रांति ने यह संभव बना दिया है कि कृषि हर जगह ज्यादा संभव हो सके।

3. यह भूमिगत भूमि की आवश्यकता को समाप्त करता है।

इस कृषि पद्धति ने किसानों को अपनी भूमि को गिरवी रखे बिना इसी तरह की फसलों को पुन: स्थापित करने की अनुमति दी है, जो कि एक महंगी प्रक्रिया है। यद्यपि वहां कुछ फसलें हैं जिन पर अभी भी मिट्टी की जरूरत होती है, हरित क्रांति ने निश्चित रूप से खेती लागत को प्रभावी रूप से कम किया है।

हरित क्रांति से नुकसान की सूची

1. यह कीड़ों और घास के कारण खतरों के विकास के लिए पैदा कर सकता है।

माना जाता है कि खेती की यह आधुनिक पद्धति जहरीली मातम और कीटों का नियंत्रण करने के लिए मुश्किल है। इसके अलावा, आनुवांशिक रूप से संशोधित जीवों और पारंपरिक पौधों के बीच क्रॉस परागण की चिंता भी है कि आक्रामक प्रजातियां उत्पन्न हो सकती हैं।

2. यह मोनो-संवर्धन को रोजगार देता है।

इस आधुनिक तकनीक के खिलाफ सबसे बड़ा तर्क यह है कि यह मोनो-संवर्धन का उपयोग करता है। यह अभ्यास भूमि के बड़े इलाकों की आवश्यकता के लिए जाना जाता है, जो अक्सर उपलब्ध नहीं होते हैं, उर्वरकों की गहन मात्रा में और पानी की बड़ी मात्रा में, किसानों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

3. स्थान के आधार पर विभिन्न मिट्टी के प्रकार के साथ इसमें कठिनाइयां होती है। चूंकि हरित क्रांति खेती के लिए मिट्टी के प्रकार को ध्यान में नहीं रखता है, केवल क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए और फसल की खेती के लिए इसकी क्या जरूरत है, यह सुनिश्चित करने के लिए कुछ भी नहीं है कि मिट्टी की उर्वरता फिर से मंगाई या बनाए रखी है।

हरित क्रांति में वास्तव में कई फायदे हैं, लेकिन इसके नुकसान भी ध्यान देने योग्य हैं। ऊपर सूचीबद्ध तथ्यों के आधार पर, क्या आप सोचते हैं कि यह आधुनिक कृषि पद्धति आज समाज में उपयोग करने के लिए फायदेमंद है या नहीं ?

देशहित पहले है ना !

कु. हनी खिलवानी
सुपुत्री श्री महेश खिलवानी
सहायक, नगर विकास स्कंध

मैने टी.वी. पर देखा
दो साल का बच्चा
पापा की गोद में,
विलाप कर रहा था, माँ के लिए
और वह कोरोना वॉरियर,
बहा रही थी आंसू ममता के
दूर अस्पताल के दरवाजे से
मन किया दौड़कर आलिंगन में भर ले
परंतु...
देशहित पहले है ना।

मैंने वॉट्सअप पर देखा
उस डॉक्टर को,
बैठा था अपने घर से दूर,
एक चबूतरे पे।
निहार रहा था अपने परिवार को प्यार से
तृप्त था पत्नी के हाथों से बनी
चाय की चुस्की पे।
बच्चो की आखों में
पिता के लिए गर्व था,
खाली कप रख, मुड़के चलता बना
कोरोना वॉरियर
बच्चे देखते रहे अभिमान से,
देशहित पहले है ना।

मैंने अखबार में पढ़ा...
अपने तीन साल के बेटे
को अंतिम विदाई देने के लिए
उसे छूने, गले लगाने की
अधूरी रह गई
एक कोरोना वॉरियर बार्ड बॉय की इच्छा
खूब फफक-फफक कर रोया था।
परंतु...
देशहित पहले है ना।

मैने सोशल मीडिया पे पढ़ा
कि घर में छह (6) माह की दूध पीती बच्ची
होने के बावजूद, पति-पत्नी पुलिसकर्मी
दिन रात जुटे हुए हैं
देश सेवा में तत्पर
तरसते हैं मासूम के साथ को।
देशहित पहले है ना।

जब मैंने जाना कि
देश सेवा में समर्पित
कर्तव्यबोध के कारण
अपने पिताजी के अंतिम दर्शन
को न जा सके
यूपी के मुख्यमंत्री योगीजी
शोक से रहे ओतप्रोत।
देशहित पहले है ना।

रोज़ अपनी जान पे खेलकर
पत्थरबाज़ी झेलकर
दिन रात एक कर
रहे हैं, कोरोना जंग लड़
लाखों कोरोना वॉरियर
देशहित पहले है ना।
देशहित पहले है ना।

जय हिन्द...

व्हॉट्सप कॉन्टेक्ट्स

श्री दिलीप के. शहाणी
सहायक लेखा अधिकारी
(पेंशन/निधि)

Whatsapp का उपयोग हम सब रोज करते हैं लेकिन क्या आपने कभी गौर किया है कि हमारे Whatsapp Contacts और उनसे हमारे या उनके हमारे साथ संवाद का हम विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि वे हमारे जीवन के कई पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। अधिकांश लोगों के Whatsapp Contacts निम्न प्रकार के होते है :-

(1) ऐसे कॉन्टेक्ट्स (Contacts) जो हमें नियमित रूप से Messages भेजते रहते हैं, फिर चाहे हम उनका उत्तर दें या न दें। वे समय-समय पर हमारा तथा हमारे परिवारजनों का हालचाल पूछते हैं, हमें जन्मदिन या सालगिरह पर बधाई देना कभी नहीं भूलते, वो बदले में हमसे कुछ अपेक्षा नहीं रखते, ऐसे Contacts हमारे सच्चे हितैषी (Well-Wishers) होते हैं।

(2) हमारे कुछ ऐसे Contacts होते हैं जिनसे हमें संवाद करने की प्रबल इच्छा रखते हैं और उन्हें नियमित रूप से Messages भेजते रहते हैं। लेकिन वे कभी कभार ही हमारे Messages का जवाब देते हैं। ऐसे Contacts दरअसल हमारी इच्छाओं/ आकांक्षाओं (Desires & Expectations) का प्रतिनिधत्व करते हैं।

(3) हमारे कुछ ऐसे Contacts होते हैं जिनसे हम केवल तब तक संवाद करते हैं जबतक कि वे हमारे लिए उपयोगी है या हमारे जीवन में कोई मायने रखते हैं या फिर हम उनसे उनके प्रति आदर या उनके पद की वजह से संवाद करते हैं, ऐसे Contacts दरअसल हमारी महत्वकांक्षाओं (Ambitions) का प्रतिनिधित्व करते हैं।

(4) कुछ Contacts ऐसे होते हैं जो सारा दिन हमें केवल प्रेषित Messages भेजते रहते हैं। न उन्हें हमारी कोई फिक्र हो या हमसे कोई विशेष लगाव, बस यंत्रवत् Messages भेजते रहते हैं। ऐसे Contacts हमारी ज़िन्दगी की छोटी-छोटी बाधाएं हैं जिनसे हमें बचना है अगर हमें हमारे लक्ष्य को प्राप्त करना है।

.

विश्वास

श्रीमती अंजू आहुजा
वरिष्ठ लिपिक
समुद्री विभाग

विश्वास पूरा है, ये पूरा यकीन है,
की जो प्रभु करेगा, वो ही सही है।
प्रभु के हाथ में ही, सारे जहां की व्यवस्था है,
प्रभु की मर्जी से ही सूरज-चाँद
निकलते हैं, और अस्त होते हैं।
जब वो जो चाहेगा, होना वही है,
जो प्रभु करेगा, वो ही सही है।
शबरी को था विश्वास, कि राम घर आएंगे।
प्रभु पधारे, विश्वास की यहाँ जीत हुई,
जो प्रभु करेगा, वो ही सही है।
विश्वास की राहों पे, हरदम आगे बढ़ते जाना है,
मजबूत इरादों से हमें हर सुख पाना है।
जो प्रभु करेगा, वो ही सही है।
विश्वास है, जो प्रभु करेगा, वो ही सही है।

हिंदी की विकास यात्रा

श्री गोपाल शर्मा
लेखा अधिकारी (रोकड़)

हिंदी भाषा ने अपनी विकास यात्रा के एक हजार से अधिक वर्षों के दरम्यान अनेक चुनौतियों और संघर्षो का सामना किया है। प्रत्येक संघर्ष और चुनौती ने उसे एक नयी शक्ति प्रदान की है। हिंदी की मूल-शक्ति उसका सामाजिक रूप है, जो जाति, धर्म-संप्रदाय और क्षेत्र की सीमाओं का अतिक्रमण करता है। वस्तुत: हिंदी पूरे राष्ट्र को एकता में बांधने वाली संपर्क भाषा है।

राजभाषा अधिनियम 1963 तथा राजभाषा नियम 1976 बनाये जाने के बावजूद आज भी हिंदी को अंग्रेजी की वैशाखी के सहारे चलना पड़ रहा है, जबकि संविधान की आठवीं अनुसूची में अंग्रेजी भारतीय भाषा नहीं मानी गयी है। आज हिंदी की स्थिति में निरंतर सुधार हो रहा है। इस दिशा में सरकारी और गैर-सरकारी उपक्रमों की भूमिका महत्वपूर्ण है। स्वाधीनता के पश्चात हिंदी भाषा ने अपनी प्रगति की है। हिंदी निरंतर रोजगार और व्यवसाय का माध्यम बनती जा रही है। हिंदी को उसके इस मुकाम तक पहुचाने में हिंदी सेवी संस्थानों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा आयोजित एक सम्मेलन में 29 दिसम्बर 1905 को बाल गंगाधर तिलक ने यह घोषणा की थी कि हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है।

संविधान सभा ने 14 सितम्बर 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। इस दिशा में जो प्रयत्न हुए वे हिंदी के विकास और प्रचार-प्रसार में सहायक हुए। 1975 में राजभाषा विभाग की स्थापना एवं 1976 में संसदीय राजभाषा समिति गठित की गयी। 1977 में तत्कालीन विदेश मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने पहली बार संयुक्त राष्ट्रसंघ की साधारण सभा को हिंदी में संबोधित किया। राजभाषा अधिनियम 1963 संसद द्वारा पारित किया गया था।

हिंदी लिखना-पढ़ना और बोलना किसी भी भाषा-भाषी के लिए अपेक्षाकृत सरल है, क्योंकि देश की अधिकांश भाषाओं की वर्णमाला और लिपि से इसकी समानता है। राजभाषा हिंदी को उसके अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए सभी का सहयोग आवश्यक है।

हर विचार एक बीज है

अच्छे विचारों से एक सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न होता है जिस तरह अच्छे बीज से अच्छी पौध पैदा होती है। हम अधिक उत्पादक, सक्षम एवं आकर्षक होते हैं, एवं प्रभु के सबसे नजदीक होते हैं, जब हमारा दृष्टिकोण सकारात्मक होता है। प्रतिदिन सवेरे जागने पर एवं रात को सोने से पहले हमें अपने दिमाग में प्रेरणात्मक, आध्यात्मिक तथा उत्साहपूर्ण विचार पैदा करने चाहिए। अपने उद्देश्यों को सोचो, मानो और उनकी पूजा करो। हर दिन की उपलब्धियों का सार लिखो और उन्हें पढ़ो। इस एक आदत से आपका दृष्टिकोण बदलेगा तथा आत्मविश्वास में दिनोंदिन बढ़ोत्तरी होगी। अपने तथा दूसरों के प्रति अच्छा सोचें। डर, चिंता, आरोप लगाना तथा हीन भावना से दूर रहे। किसी के प्रति मन में नफरत न रखें। यदि आप इन छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखेंगे, तो आपका दृष्टिकोण स्वयं ही सकारात्मक होने लगेगा जो कि आपके जीवन की सफलता की पहली सीढ़ी है।

लाक्षागृह षडयंत्र

श्री दिनेश आई. भूत
सहायक
समुद्री विभाग

युधिष्ठिर को भीष्म, विदुर और प्रजा जनों की सहमति से धृतराष्ट्र ने युवराज बनाया, जबकि दुर्योधन को राजकोष का अध्यक्ष बनाया गया। युधिष्ठिर से सारी प्रजा खुश थी लेकिन शकुनि, दुर्योधन एवं दु:शासन परेशान थे। शकुनि, दुर्योधन, दु:शासन और कर्ण ने आपस में मिल के गुप्त सलाह की। शकुनि ने पुरोचन को बुलाया और वार्णावत में एक सुंदर भवन लाक्षागृह का निर्माण करने को कहा। शकुनि ने कहा कि जब रात्रि में पांडव सो जाएंगे तब उस लाक्षागृह में आग लगा दी जाएगी जिससे सब पांडव वहीं मर जायेंगे और दुर्योधन राजा बन जाएगा। कर्ण इस बात से सहमत न था। उसने कहा कि पांडवों को हम युद्ध करके मारेंगे, पर किसी ने उनकी बात न मानी।

दुर्योधन ईर्ष्या की आग में जलता हुआ धृतराष्ट्र के पास आया और कहा, पिताजी मैंने बड़ी अशुभ बातें सुनी है। सभी नगरवासी आपका और भीष्मजी का अनादर करके युधिष्ठिर को राजा बनाना चाहते हैं। पांडु ने अपने सदगुणों के कारण पिता से राज्य प्राप्त कर लिया और आप अंधे होने के कारण अधिकार प्राप्त राज्य को भी न प्राप्त कर सके। मैं राजा बनना चाहता हूं, क्योंकि आप ज्येष्ठ है और मैं आपका पुत्र हूँ। नियम तो ये है की ज्येष्ठ का ही पुत्र राजा बनता है।

अपने बेटे की बात सुनकर धृतराष्ट्र शोक में डूब गए। दुर्योधन ने फिर कहा कि, पिताजी आप किसी तरह पांडवों को वार्णावत नगर भेज दीजिये। धृतराष्ट्र युधिष्ठिर को अपने पास बुलाया और कहा कि दुर्योधन चाहता है कि अबकी बार आप वार्णावत नगर में जाए। युधिष्ठिर ने वार्णावत नगर जाने की हाँ कर दी।

जब पांडवों का जाना पक्का हो गया तब दुर्योधन व शकुनि ने पुरोचन को बुलाकर कहा कि तुम आज ही वार्णावत पहुंच जाओ और एक सुंदर भवन का निर्माण करो,जिसकी दीवार में आग भड़काने वाले द्रव्य – घी, तेल, चर्बी तथा बहुत–सी लाह मिट्टी में मिली हो, लेकिन किसी को इस बात की शंका न हो की, यह भवन आग लगाने वाली द्रव्य से बना है। भवन बन जाने पर पांडवों को वहाँ आमंत्रित किया जाएगा। जब तुम्हें विश्वास हो जाए कि पांडव वहाँ आराम से सो गए हैं, तब भवन के दरवाजे की ओर से आग लगा देना, ताकि लोग यही समझेंगे की भवन में लगी आग के कारण पांडव जल कर मर गए। पुरोचन ने दुर्योधन के सामने वैसा ही करने की प्रतिज्ञा की और वार्णावत नगर के लिए प्रस्थान किया।

इधर ज्ञानी विदुर शकुनि और दुर्योधन के मन के भाव समझ गए और गुप्त मंत्रणा का भी पता लगा लिया एवं सारी बातें जान ली। विदुर ने पांडवों के जाने से पहले युधिष्ठिर को संकेत कर दिया और पूछा कि जंगल में आग लगने से कौन बच सकता है ? युधिष्ठिर ने जवाब दिया कि जंगल की आग में चूहा सुरक्षित रह सकता है, क्यूंकि वो बिल में घुस जाता है। युधिष्ठिर उनका संकेत समझ गए और कहा कि मैंने आप की बात अच्छी तरह समझ ली है।

पांडवों ने माता कुंती के साथ फाल्गुन शुक्ल अष्टमी के दिन रोहिणी नक्षत्र में यात्रा की थी। वे यथासमय वार्णावत पहुंचे और फिर वहां के नागरिकों से मिले। वार्णावत नगर के लोग पांडवों के आने से बहुत खुश हुए एवं उनके आशीर्वाद लेने पहुंचे। लोगों ने उन्हें खान–पान के साथ बड़ा सन्मान भी दिया। उस भवन में पुरोचन द्वारा पांडवों का सत्कार भी हुआ।

पुरोचन के कहने पर पांडव लाक्षागृह गए । उस भवन को अच्छी तरह देखकर युधिष्ठिर ने भीम से कहा, भाई यह भवन तो आग लगाने वाली वस्तुओं से बना लगता है । मुझे इस घर की दीवारों से घी और लाह की बनाई हुए चर्बी की गंध आ रही है । यह पापी पुरोचन दुर्योधन के आज्ञा के अधीन सोच रहा होगा कि हम सोए हों तब आग लगा कर घर के साथ ही हमें जला दे । लेकिन विदुरजी ने हमारे ऊपर आने वाली विपत्ति को समझ लिया था और हमें पहले ही सचेत कर दिया था । विदुरजी सदा हमारे हित चाहने वाले हैं ।

फिर एक सुरंग खोदने वाले मनुष्य को विदुरजी ने पांडवों के पास भेजा । सुरंग खोदने वाले मनुष्य ने बताया की वह आपकी सेवा के लिए आया है, ऐसी सुरंग बनाएगा कि सब इसमें से बचकर निकल जाएंगे । फिर उसने सुरंग खोदना शुरू किया । जिसके बारे में पांडवों और विदुरजी के अलावा किसी को भी नहीं पता था । उसने सुरंग का मुख युधिष्ठिर के सिंहासन के पास ही बना दिया । फिर वो वहाँ से चला गया । एक भीलनी अपने पाँच बेटों के साथ भोजन की इच्छा से वहाँ आई थी । रात बहुत हो चुकी थी तो वे सब भोजन के बाद भवन में ही सो गए । जब रात को सब सो रहे थे तभी भीमसेन ने उस जगह आग लगा दी, जहाँ पुरोचन सो रहा था । उसके पश्चात उन्होंने उस सारे भवन में आग लगा दी । जब सारा भवन अग्नि के लपेट में आ गया तब पांडव, माता कुंती के साथ सुरंग में घुस गए। अग्नि ज्वाला देख कर सारे नगर में हाहाकार मच गया । नगरवालों ने सोचा कि आग में कुंती और पांडव जल कर भस्म हो गए हैं । उधर पांडव अपनी माता के साथ काफी दूर सुरक्षित निकल गए ।

''लाक्षागृह'' में पांडवों को मारने का दुर्योधन का सपना अधूरा रह गया ।

श्री दिनेश आई. भूत
सहायक
समुद्री विभाग

शब्द पहेली

इस शब्द पहेली में 30 (तीस) ऐसे शब्द हैं, जो रोजाना कार्यालय में, हिन्दी में किए जाने वाले कार्य के दौरान उपयोग किए जाते हैं । आप में से कितने इन शब्दों को पहचान कर ढूंढ कर निकाल सकते हैं । तो चलिए, प्रयास करिए....

प	ग्न	रा	श	प्र	शी	सां	प्रा	रु	प
लि	रि	दे	नौ	बं	घ्र	य	ख्य	ण	ख
पि	आ	यो	र	ध	दे	अ	र	की	त
क	र्मि	का	ज	न	वे	ह	ग्रि	ग	य
अ	स्वी	का	र	ना	आ	त	ला	म	मा
का	त	र्जि	अ	ब	अ	वे	न	सौ	ना
र्या	प्र	स्ता	व	नु	का	व	द	दा	त्र
न्व	चा	ह	पा	रि	मो	या	धि	न	प
य	ल	ल	सि	मि	ष्ठ	दि	ग्ता	पा	रि
न	न	धी	रा	चा	वि	भु	त	च	प

कृपया उत्तर के लिए पृष्ठ सं. 34 पर जाएं ।

संदर्भाधीन अवधि के दौरान गतिविधियों की झलकियाँ

दि. 26 जनवरी 2021 को गणतंत्र दिवस के अवसर पर
राष्ट्रीय ध्वज को सलामी देते हुए
अध्यक्ष, दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट श्री एस. के. मेहता

दि. 26 जनवरी 2021 को गणतंत्र दिवस समारोह के दौरान
पुरस्कार वितरण का चित्र

दिनांक 01 जनवरी 2021 को शहर वानिकी
योजना के तहत वृक्षारोपण करते हुए
अध्यक्ष, दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट श्री एस. के. मेहता

दिनांक 01 जनवरी 2021 को सी.आई.एस.एफ.
कॉम्प्लेक्स में प्रकाश परियोजना का उद्घाटन करते हुए
अध्यक्ष, दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट श्री एस. के. मेहता

दिनांक 01 जनवरी 2021 को पोर्ट परिसर में
मार्ग प्रकाश परियोजना का शुभारंभ करते हुए
अध्यक्ष, दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट श्री एस. के. मेहता

दिनांक 21 जनवरी 2021 को पोर्ट दौरे के दौरान
डॉ. संजीव रंजन, सचिव – पत्तन,
पोतपरिवहन एवं जलमार्ग मंत्रालय को जानकारी देते हुए
उपाध्यक्ष, दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट श्री नंदीश शुक्ल

संदर्भाधीन अवधि के दौरान गतिविधियों की झलकियाँ

दि. 29 जनवरी 2021 को उपाध्यक्ष, दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट श्री नंदीश शुक्ल की अध्यक्षता में आयोजित नराकास की छमाही ऑनलाईन बैठक का दृश्य

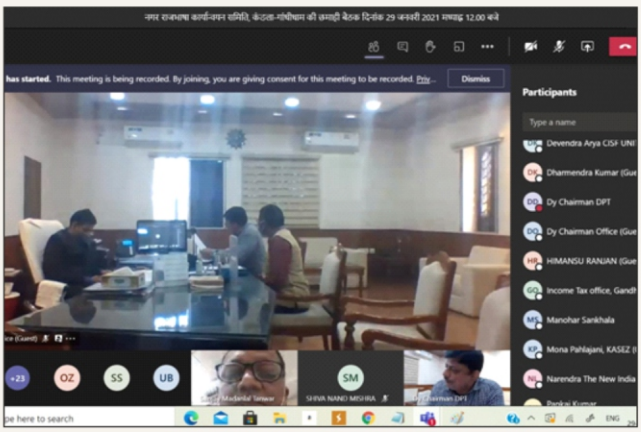

दि. 29 जनवरी 2021 को आयोजित नराकास की छमाही ऑनलाईन बैठक का एक अन्य दृश्य

दि. 21 फरवरी 2021 को ईआरपी कार्यान्वयन से संबंधित आधारभूत सुविधाओं का उद्घाटन करते हुए अध्यक्ष, दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट श्री एस. के. मेहता

दि. 24 फरवरी 2021 को अध्यक्ष, दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट श्री एस. के. मेहता जी की उपस्थिति में हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापनों का आदान-प्रदान ।

दिनांक 04 मार्च 2021 को दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट द्वारा नराकास के तत्वावधान में सदस्य कार्यालयों के लिए आयोजित ऑनलाईन हिंदी संगोष्ठी का दृश्य ।

दि. 08 मार्च 2021 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित समारोह का उद्घाटन करती हुईं श्रीमती अमिता मेहता, धर्मपत्नी श्री एस. के. मेहता, अध्यक्ष, दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट

संदर्भाधीन अवधि के दौरान गतिविधियों की झलकियाँ

दिनांक 12 मार्च 2021 को आयोजित हिंदी कार्यशाला का एक दृश्य

दिनांक 12 मार्च 2021 को आयोजित हिंदी कार्यशाला में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार वितरित करते हुए सचिव, दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट श्री सी. हरिचंद्रन

दि. 18 मार्च 2021 को नराकास के तत्वावधान में एच.पी.सी.एल. द्वारा सदस्य कार्यालयों के लिए आयोजित संयुक्त हिंदी कार्यशाला का समूह चित्र

दि. 22 मार्च 2021 को उपाध्यक्ष, दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट श्री नंदीश शुक्ल की अध्यक्षता में आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का दृश्य

दिनांक 21 मई 2021 को आतंकवाद विरोध दिवस के अवसर पर शपथ दिलाते हुए अध्यक्ष, दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट श्री एस. के. मेहता

दिनांक 28 जून 2021 को आजादी का अमृत महोत्सव के तहत 16वें सप्ताह के आयोजन का एक दृश्य

संदर्भाधीन अवधि के दौरान गतिविधियों की झलकियाँ

कोविड महामारी के विरुद्ध संघर्ष हेतु
दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट अस्पताल में की गई विविध तैयारिओं के दृश्य

दिनांक 28 जून 2021 को आयोजित हिंदी कार्यशाला के दौरान
सहभागियों को प्रशिक्षण प्रदान करते हुए हिंदी अधिकारी
श्री शैलेन्द्र कुमार पांडेय

दिनांक 28 जून 2021 को आयोजित हिंदी कार्यशाला में प्रश्नोत्तरी
प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार वितरित करते हुए
सचिव, दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट श्री सी. हरिचंद्रन

दिनांक 28 जून 2021 को आयोजित हिंदी कार्यशाला का एक समूहचित्र

दि. 29 जून 2021 को उपाध्यक्ष, दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट
श्री नंदीश शुक्ल की अध्यक्षता में आयोजित
राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का दृश्य

दि. 29 जून 2021 को आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की
तिमाही बैठक के दौरान पोर्ट की छमाही हिंदी गृहपत्रिका
'लहरों का राजहंस' के २०वें ई-अंक का
विमोचन करते हुए श्री नंदीश शुक्ल, उपाध्यक्ष, दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट

जहाजी : व्यक्ति चित्र...

डॉ. महेश बापट
वरिष्ठ उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी

भाई । आपके डिपार्टमेंट में कोई चूहा चूहा नहीं होता है ना ? जहाजी बोले । रमेश इस बात पर धोखा खा गया । जहाजी अपने वक्तव्य के बाद बाकी लोगों से हंसी के ठहाके की उम्मीद कर रहे थे । रमेश मौका चूक गया और बोल पड़ा । हां सर 2-3 बड़े-बड़े मोटे-मोटे चूहे हैं । सारी हरी लाल पीली चिट्ठियों को कुतर-कुतर कर खा चुके हैं इस तरह कि, अब प्रिंटर भी चिल्ला रहा है क्या अभी तो प्रिंट करके दिया था मैंने, इतनी जल्दी खत्म हो गई ? ना ना भाई मैं तो रैट रेस की बात कर रहा था कि आपके यहां तो कोई एक दूसरे से होड़ तो नहीं लगी हुई । अब समझा रमेश बोला । तब तक बात आई गई हो गई।

जहाजी हैं तो कद में छोटे, लेकिन उनकी माया बड़ी अपरंपार थी । कहते थे की बड़े-बड़े डूबे हुए जहाजों को उन्होंने कागजों पर अति उतम सिद्ध कर दिया था । उनकी इस फ़ितरत का लोग लोहा मानते थे । कई बिन पेंदी के जहाजों को उन्होंने तैरता दृष्टिगोचर करवा दिया था । शायद इसी वजह से उनका नाम जहाजी पड़ा हो ।

दूसरी एक और कला में वह अत्यंत माहिर थे । वह कला थी इसकी टोपी उसके सर । इस कलाकारी में इतना माहिर कि ना तो टोपी पहनने वाला समझ पाता कि उसके सिर पर दूसरे किसी की टोपी है ना तो टोपी को ही पता पड़ता था कि वह कितनी देर में कौन-कौन से सिर पर बैठ जाएगी । इस कला में होता ऐसा है कि जिस ने टोपी पहनी है वह स्वयं भी टोपी पहनाने वाले के प्रति ही अभिभूत हो जाता है ।

जहाजी बड़े स्थितप्रज्ञ थे ना उन्हें प्रशंसा से कोई फर्क पड़ता था ना ही गालियों से । दिन भर दरबार-सा लगा रहता । बहुत सारे लोग हुजूम में आकर मिलते रहते । जिन से वो डरते थे, या कहीं लाभ का सौदा होता, उनके सारे उल्टे सीधे काम ऐसे निकाल लाते कि मानो खुद के परिवार के काम हो । जिनका काम उन्हें नहीं करना रहता था उसकी टोपी ऐसी घुमाते थे कि खुद शिकायतकर्ता को ही वह काम असंभव लगे । बाकी सीधे लोगों के लिए उनके पास समय न था ।

बीच-बीच में बड़े दार्शनिक भाव से किसी से कहते देखिए ना, न्याय और अन्याय के बीच एक बिल्कुल पतली भेद रेखा है । जब तक मैं इस कुर्सी पर बैठा हूं किसी के प्रति अन्याय ना होने दूंगा । प्रत्यक्षत: तब तक अन्याय हो चुका होता था । बेवजह गंभीरता का लबादा ओढ़कर अपने आप को अति व्यस्त दिखाना यह एक उनका और गुण था ।

ना ऊपर वालों का पता पड़ता था कि जहाजी क्या कर रहे हैं ना नीचे वालों को । जहाजी मस्त अपना टाइम पास कर रहे थे । यह जगह भी उनको बड़ी भा गई थी छोड़ना ही नहीं चाहते थे । कंपनी में तो कुछ समय के लिए मानो ऐसा था कि बड़े साहब की जगह खाली ही पड़ी थी सो जहाजी ही बड़े साहब की जगह बैठते, अधिकार बड़े साहब के और काम कुछ नहीं, बड़ी पौ बारह थी ।

उगते हुए सूरज का अस्त भी अवश्यंभावी है । उनका बेटा उनकी इस इसकी टोपी उसके सर वाली कला में महारथी हो गया । फर्क केवल इतना था जहाजी की कलाकारी उनकी पद की वजह से छुप जाती थी लेकिन बेटा तो अभी छोटा था । पढ़ रहा था । इस कलाकारी से अनेक तरह के ऐब उसमें आ गए । पढ़ाई छोड़ कर वह वन टू का फोर और नशेबाजी में लग गया । जिस जहाज पर अपेक्षा रखकर वह इस संसार समुद्र को पार करने का सपना संजोए थे वह अब कब समुद्र में डुबो देगा यह चिंता अब जहाजी को सताने लगी ।

जिम्मेदारी

सुश्री दीक्षा राजपुरोहित
सहायक यातायात प्रबंधक

आंसू छलक गऐ उस क्षण,
जब माँ ने कहा ''शुक्रिया बेटा मेरी
ज़िम्मेदारियाँ उठाने के लिए''
फिर सोचा क्यूँ न आज मैं भी शुक्रिया कहकर,
सारा हिसाब पूरा कर दूं,
बस समझ ये नहीं आ रहा था कि
किस किस बात के लिए तुझे शुक्रिया कहूं

ये जानते हुए भी कि मेरे आने से
तेरी ज़िम्मेदारियाँ और बढ़ जाएंगी,
फिर भी मुझे दुनिया में लाने के लिए ।

नौ महीने अपने गर्भ में रखकर,
मौत से लड़के मुझे इस दुनिया में लाने के लिए ।

अपनी रातों की नींद खो कर,
मुझे घंटों थपथपाके सुलाने के लिए ।

मेरे जरा-सा सिसकते ही,
एक पल में गहरी नींद से उठ जाने के लिए ।

मेरे एक आँसू के निकलते ही,
अपनी सारी दुनिया भूल के
मुझे अपनी गोद में उठाने के लिए ।

मेरे लड़खड़ाते कदमों पे,
मेरा हाथ थाम के 'मैं गिरूँगी नहीं'
ये यकीन दिलाने के लिए ।

मेरी जिन्दगी सँवर जाए इसलिए,
सारी दुनिया से लड़कर
मुझे पढ़ाने-लिखाने के लिए ।

जिन्दगी के हर पड़ाव पे,
मेरी जरूरतों को समझ के
मेरा साथ निभाने के लिए ।

मुझमें और भाई में फर्क न करके,
मुझे उसके समान दर्जा दिलाने के लिए ।

सर उठाकर जिन्दगी जी सकूं,
मुझे इतना काबिल बनाने के लिए ।

हर मुश्किल परिस्थिति का सामना कर सकूं,
मुझे खुद पे इतना भरोसा दिलाने के लिए ।

तो अब मैं ये कैसे भूल जाऊं कि
मेरा होना ही तुझसे है

शायद इस जन्म में तो तेरे ये कर्ज न उतार पाऊं
चाहे ताउम्र तेरी हर ज़िम्मेदारी में तेरा साथ निभाऊं
बस इतनी ही तमन्ना है दिल से कि
हर जन्म में...मैं तेरा ही अंश बन कर आऊं
हर जन्म में...मैं तेरी ज़िन्दगी का
एक छोटा-सा हिस्सा बन पाऊं
हर जन्म में... मैं तेरी ही बेटी कहालाऊं
...मैं तेरी ही बेटी ही कहालाऊं।।

काश !

कितनी अलग होती जिन्दगी,
अगर तू साथ होता ।

कितना सुकून होता,
अगर तू हर साकार होते सपने देखने को पास होता ।
चुनौतियों का सफर थोड़ा आसान होता,
अगर तेरे अनुभवों का सहारा मेरे पास होता ।
डर का दूर-दूर तक नामों निशान नहीं होता,
अगर सिर पर मेरे, तेरे आशीर्वाद का हाथ होता ।

खुशियों का रंग भी कुछ खास होता,
अगर तेरा मुस्कुराता चेहरा आस-पास होता ।
हर खुशी के मौके पर आखों में
आंसुओं का सैलाब नहीं होता,
अगर तेरी कमी का बार-बार एहसास नहीं होता ।
अधूरे सपने के दर्द से मेरा वास्ता नहीं हुआ होता,
अगर बीच राह में तू यूं छोड़ कर ना गया होता ।
काश!....वो ऊपर वाला
मुझे कुछ और चंद लम्हे तेरे साथ दे देता
काश..ये काश सच होता
काश...ये काश सच होता ।

अवचेतन मन

श्री रिषभ के. मातुरकर
अप्रेन्टिस, भंडार प्रभाग

अवचेतन मन-कैसे अनलॉक करें और अपनी शक्ति का उपयोग करें

अवचेतन मन शक्तिशाली माध्यमिक प्रणाली है जो आपके जीवन में सब कुछ चलाती है। चेतन और अवचेतन मन के बीच संचार को प्रोत्साहित करना सीखना सफलता, खुशी और धन के रास्ते पर एक शक्तिशाली उपकरण है।

अवचेतन मन हर चीज का डेटा बैंक है, जो आपके चेतन मन में नहीं है। यह आपके विश्वासों, आपके पिछले अनुभव, आपकी यादों, आपके कौशल को संग्रहीत करता है। आपने जो कुछ देखा, किया या सोचा, वह सब भी है।

यह आपकी मार्गदर्शन प्रणाली भी है। यह खतरों और अवसरों के लिए इंद्रियों से आने वाली सूचनाओं पर लगातार नजर रखता है। और यह जानकारी को चेतन मन तक पहुंचाएगा, जिससे आप संवाद करना चाहते हैं।

अवचेतन और चेतन मन के बीच संचार द्विदिश है। हर बार जब आपके पास कोई विचार, या भावना, स्मृति या अतीत की कोई छवि होती है, तो यह अवचेतन मन आपके चेतन मन से संचार करता है। दूसरे तरीके से अवचेतन मन से संचार इतना तुच्छ नहीं है, और है तो ऑटो-सुझाव के सिद्धांत का उपयोग करके प्राप्त किया जाता है।

यह लेख अवचेतन मन की शक्तियों का और उनका उपयोग सफलता के रास्ते पर कैसे किया जा सकता है उसका परिचय देगा। आप सीखेंगे कि अपने अवचेतन मन के साथ बेहतर संवाद कैसे करें और इसे उस ट्रैक पर कैसे सेट करें जिसका आप अनुसरण करना चाहते हैं।

अवचेतन मन क्या है ?

क्या आपने कभी पढ़ा है कि इंसान अपने दिमाग के एक हिस्से का ही इस्तेमाल करता है ? खैर, यह सबसे बढ़कर है, अवचेतन मन के कारण। वैज्ञानिकों ने वास्तव में कभी इसका गहराई से अध्ययन नहीं किया है और हम अभी भी इसके बारे में पर्याप्त नहीं जानते हैं। लेकिन हम जानते है कि यह हमारे द्वारा की जाने वाली लगभग हर चीज को चला और नियंत्रित कर सकता है।

उदाहरण के लिए, जब आप ध्यान करते हैं और आप अपनी सांस को नियंत्रित करना शुरू करते हैं, तो आप अवचेतन मन से नियंत्रण प्राप्त करते हैं और इसे अपने चेतन मन को देते हैं। आपकी सांस तब तक शिथिल होती रहेगी जब तक कि कोई अन्य उत्तेजना इसे बदल नहीं देती (उदाहरण के लिए तनाव)। सब कुछ आपके सिर के पिछले हिस्से में नियंत्रित होता है।

अवचेतन मन के कार्यों का एक और उदाहरण इंद्रियों से आने वाली जानकारी है। आपके मस्तिष्क में प्रति सेकंड सैकड़ों एमबी सूचना की बमबारी होती है। अगर इसे सब कुछ समीक्षा और संसाधित करना पड़ा तो यह विस्फोट हो जाएगा। यही कारण है कि तुम्हारे बीच एक बाधा है – अवचेतन मन। यह सब कुछ संसाधित करता है और यह केवल इस जानकारी को पास करेगा जो आपके लिए इसी क्षण में प्रासंगिक है।

आपके अवचेतन मन से संचार

आपने अवचेतन मन से अपने अवचेतन मन में विचारों का संचार करना कठिन है क्योंकि इसे भावनाओं के साथ किया जाना चाहिए। केवल वही विचार जो वास्तविक भावनाओं से संप्रेषित होते हैं, आपके दिमाग के पिछले हिस्से में आते हैं। और केवल वही विचार रहते हैं जो एक मजबूत भावना द्वारा समर्थित होते हैं। दुर्भाग्य से, यह नकारात्मक और सकारात्मक दोनों भावनाओं के लिए सच है। और दुर्भाग्य से, नकारात्मक भावनाएं आमतौर पर सकारात्मक लोगों की तुलना में अधिक मजबूत होती है।

डर और नकारात्मक आत्म चर्चा

अवचेतन मन की शक्ति का उपयोग करने में आपका पहला कदम नकारात्मक भावनाओं से भरे विचारों को खत्म करना है। आपको नकारात्मक आत्म–चर्चा को रोकने या कम से कम यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि यह भावनाओं से भरा नहीं है।

आपके डर अक्सर सच हो जाते हैं, खासकर जब आप उनके बारे में बहुत भावुक होते हैं और यही कारण है कि नकारात्मक आत्म–चर्चा ऐसे हानिकारक प्रभाव उत्पन्न कर सकती है। इन नकारात्मक विचारों को दूर करना या उनका यथाशीघ्र प्रतिकार करना सफलता की ओर बहुत ही महत्वपूर्ण कदम है।

अभिभावक देवदूत के बारे में एक कहानी है जो हमेशा आपका अनुसरण करती है। जब आप अपने आप से कहते हैं ''मेरा जीवन भयानक है '', तो यह भयानक जीवन को लिखता है। जब आप कहते है ''मेरा काम उबाऊ है'', तो यह उबाऊ काम लिखता है और जब तुम कहते हो कि मेरा शरीर कुरूप है, तो वह कुरुप शरीर लिख देता है और फिर यह आगे बढ़ता है और आपको उन सभी इच्छाओं को पूरा करता है, क्योंकि वे मजबूत भावनाओं (उदासी, निराशा, अफसोस, आत्म–घृणा) से भरे हुए हैं। वह फरिश्ता आपका अवचेतन मन है।

यहां रुकें और अपने आपसे पूछें: ''क्या आप नकारात्मक आत्म–चर्चा को अपने दिमाग में प्रवेश करने दे सकते हैं ?''

नकारात्मक आत्म–चर्चा को रोकने या कम करने की कई तकनीकें हैं जैसे कि...

काउंटरिंग तकनीक – डिलीट बटन तकनीक – ब्रिज बर्निंग तकनीक – प्रेरक तकनीक – विजुअलाइज़ेशन तकनीक – विश्वास और प्यार–शारीरिक तैयारी तकनीक

नकारात्मक आत्म चर्चा को कम करने के सर्वोत्तम अभ्यासों में से एक विजुअलाइज़ेशन तकनीक है।

विजुअलाइज़ेशन तकनीक

और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में अगला कदम उसकी कल्पना करना है। यह परिणाम में विश्वास रखने पर आधारित है। उम्मीद नहीं है कि वांछित परिणाम सच होगा, लेकिन विश्वास है कि यह पहले से ही सच है।

सबसे शक्तिशाली तकनीकों में से एक है अपने जीवन की कल्पना करना जब आपकी इच्छा पहले ही पूरी हो चुकी हो। अपनी आँखें बंद करने के लिए दिन में कई मिनट अलग रखें और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के बाद अपने जीवन की कल्पना करें। इसे यथासंभव उज्ज्वल बनाएं :

तुम क्या पहन रहे हो ? आप कैसे कार्य करते हैं ? तुम्हे कैसा लग रहा है ?

तुम क्या कह रहे हो ? तुम क्या कर रहे हो ?

अपने अवचेतन मन से संचार प्राप्त करना

जैसा कि हम पहले ही स्थापित कर चुके हैं, चेतन और अवचेतन मन के बीच संवाद दोतरफा है। आप अपने अवचेतन मन को कार्य, इच्छाएं और लक्ष्य देते हैं और यह आपको जानकारी, अवसर और विचार देता है।

क्या आपने कभी सोचा है कि कुछ लोग ऐसे क्यों होते हैं जो आसानी से नए अवसर खोज लेते हैं ? ऐसा इसलिए होता है क्योंकि उनका अवचेतन मन उन्हें किसी विशिष्ट विषय पर अन्य लोगों की तुलना में अधिक जानकारी देता है।

क्या आपने कभी गौर किया है कि जैसे ही आप वास्तव में कुछ करने का निर्णय लेते हैं, जल्द ही एक अवसर आता है जो आपको उसे करने की अनुमति देता है ? ऐसा इसलिए है क्योंकि जब आप निर्णय लेते हैं, तो आप एक विचार बनाते हैं और उसमें इच्छा और विश्वास भरते हैं और आपको अचानक वह जानकारी मिलनी शुरू हो जाती है जिसे हासिल करने के लिए आपको जरूरत होती है।

सारांश

अवचेतन मन आपके शस्त्रागार में मौजूद सबसे शक्तिशाली हथियारों में से एक है। यह अवसर तलाशने या चूकने के बीच का अंतर हो सकता है या अमीर और तृप्त या गरीब और दुखी जीवन जीने के बीच का अंतर। यह आपको लोगों के लिए काम करने के लिए गुलाम बना सकता है। ऑटो–सुझाव आपके चेतन मन से आपके अवचेतन मन में विचारों और विचारों को पेश करने का तरीका है। इस कौशल का उपयोग करके आप अपने अवचेतन मन को उन लक्ष्यों की ओर काम करने के लिए प्रभावित कर सकते हैं जो आपके लिए महत्वपूर्ण है। इसमें महारत हासिल करने से जीवन सफल हो सकता है और आपके सभी सपने पूरे हो सकते हैं।

डिजिटल उपवास

कु. फातिमा बोहरा
प्रबंधन प्रशिक्षार्थी
समुद्री विभाग

सवेरे से मित्र को चार बार फोन किया। लेकिन वह जवाब नहीं दे रहा था।

व्हॉट्सअप एवं फेसबुक पर भी संदेश भेजे, पर कोई जवाब ही नहीं मिला।

मुझे चिंता हो गई। आखिर दोपहर बाद मुझसे रहा नहीं गया और मैं नजदीक में रहने वाले उस मित्र के घर पहुंच गई। देखा तो श्रीमान अपने घर के बगीचे में पुस्तक लिए बैठे हुए थे। मैं जाते ही उस पर बरस पड़ी, ''सुबह से तुम्हें फोन कर रही हूँ, संदेश भेज रही हूँ, लेकिन तुम्हारा कोई जवाब ही नहीं मिल रहा है। क्या बात है ? तबीयत तो ठीक है न?'' मित्र ज़ोर से हंस पड़ा और बोला, ''आज मेरा उपवास है, इसलिए मैं तुमसे फोन पर बात नहीं कर सकता।''

मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ और कहा, ''यार, उपवास में व्रत रखते है, खाना नहीं खाते, पर फोन से तो बात कर सकते हैं, संदेश तो भेज सकते हैं न?''

उसने हँसते हुए कहा कि, ''आज मेरा 'डिजिटल उपवास' है, हफ्ते में एक दिन के लिए मैंने निश्चय किया है कि ना तो किसी से फोन पे बात करुंगा, न फ़ेसबुक अपडेट या व्हॉट्सअप चैट करूंगा, ना ही गूगल लिंक या कोई सोशल साइट देखूंगा। इसे मैंने 'डिजिटल उपवास' नाम दिया है। सही कह रहा हूँ, आज का दिन मेरा बहुत ही बढ़िया रहा। ना फोन की घंटी, ना ऑनलाइन चैट, ना समझ की कमी...देख, कितने दिनों से किताब पढ़ने की इच्छा थी, आज पूरी हुई...पढ़ना शुरू कर सका हूँ।''

इतने में भाभी चाय बनाकर ले आई और खुश होकर बोली, ''आज तो कमाल हो गया... शाम को सिनेमा देख, कुछ खरीदारी करने का प्लान था। पर इनके ''डिजिटल उपवास'' ने मुझे इतनी खुशी दी है कि, आपको मैं बता नहीं सकती। कितने लंबे समय के बाद आज हम साथ बैठे, खूब सारी बातें भी की, उन्होंने घर के काम में हाथ बटाया और साथ में बैठ कर खाना खाया।''

तब मैंने भी निश्चय किया कि, सप्ताह में कम से कम एक दिन ''डिजिटल उपवास'' तो मुझे भी करना चाहिए, बल्कि हम सब को करना चाहिए, ऐसी मेरी सलाह है, ताकि एक दिन तो अपने परिवार को पूरा समय दे सके....

(एक दिन परिवार के संग)

बिटिया

श्रीमती लता जे. दवे
वरिष्ठ लिपिक
सिविल अभियांत्रिकी विभाग

हर घर में हो एक बिटिया।
ऐसा सुन्दर सपना देखा था।
बिटिया तो बिटिया होती है।
जब चलना उसने सीखा था।
हर राह को पीछे छोड़ दिया।
जब कदम बढ़ाना सीखा था।
हर घर में हो एक बिटिया।
ऐसा सुन्दर सपना देखा था।
जब उसने नन्हें हाथों से।
कलम पकड़ना सीखा था।

हर उपाधि हाथों में ले डाली।
जब पढ़ना लिखना सीखा था।
जब खेलों में कदम रखा तो।
हर खेल को खेलना सीखा था।
हर घर में हो एक बिटिया।
ऐसा सुन्दर सपना देखा था।
चाँद भी उससे घबराया।
जब चाँद पे जाना सीखा था।
कभी कल्पना कभी साईना,
कभी टेरेसा बन उसने जीना सीखा था।

देश की धरोहर है बेटियाँ

जो बिन बोले सब समझ जाती हैं,
जो अपना हर फर्ज बखूबी निभाती हैं,
जो घर को खुशियों से महकाती हैं,
जो प्यारी सी बेटियाँ कहलाती हैं ।

श्रीमती ज्योति एन. भावनानी
सहायक
सामान्य प्रशासन विभाग

आज का समय बदल चुका है । आज के आधुनिक युग में बेटे और बेटी का फिक्र समाप्त-सा होता जा रहा है। आज शिक्षा के क्षेत्र का विकास होने से लोगों में इस बात की जागृति आई है कि बेटे और बेटी में कोई फर्क नहीं है। आज लगभग हर घर में खुशी-खुशी बेटियों को अपनाया जाता है ।

आज इस बात को दिल से स्वीकारा गया है कि बेटियाँ घर की लक्ष्मी स्वरूप होती है । बेटियाँ ही हैं जो न सिर्फ अपने मायके में सबसे घुलमिल जाती हैं परंतु ससुराल में भी हर रिश्ता बखूबी निभाती हैं । बेटियाँ, बेटी, बहन, पत्नी, बहू, ननद, भाभी, माँ, सास, दादी और नानी इत्यादि सारे रिश्ते बखूबी निभाना जानती हैं ।

बेटियाँ ही हैं जो शादी के बाद भी अपने सास-ससुर के साथ साथ अपने माँ-बाप का भी ख्याल रखती हैं । वे कहीं पर भी अपना फर्ज पूरा करने से पीछे नहीं रहती हैं । बेटियाँ घर की रौनक हैं । वे बगिया के उस फूल की माली हैं जो पूरे घर को खुशियों से महका देती हैं । बेटियाँ ही हैं जो मायके और ससुराल के एक-एक सदस्य की जरूरतों और खुशियों का ध्यान रखती हैं । बेटियाँ ही हैं जो त्याग करना जानती हैं । वे अपने परिवार की खुशियों के लिए अपनी सारी खुशियों को खुशी-खुशी कुर्बान कर देती हैं और इस बात की किसी से शिकायत नहीं करती हैं ।

आज बेटियाँ किसी तरह से भी बेटों से कम नहीं हैं । बेटों की भाँति बेटियों ने भी कई क्षेत्रों में अपना वर्चस्व जमाया है चाहे वो शैक्षणिक हो या राजनैतिक, धार्मिक हो या औद्योगिक, निजी से संबंधित हो या सुरक्षा से संबंधित, विज्ञान से जुड़ा हो या चिकित्सा के क्षेत्र से, हर क्षेत्र में बेटियों ने अपनी धाक जमाई है और अपने परिवार का नाम रोशन किया है । बेटियाँ ही हैं जो पूरे परिवार को एस सूत्र में बांधे रखती हैं और कुल को आगे बढ़ाती हैं। बेटियाँ दोनों परिवारों का फख्र हैं । बेटियों से घर की शान है । उन्हीं से घर-घर में हँसी और खुशी है । आज मात्र गिने चुने अशिक्षित लोग ही बेटी के महत्व को समझने में अक्षम हैं । जो बेटी के घर में आने से दु:खी होते हैं । वो बेटी के जन्म से पहले ही गर्भ में भ्रूण हत्या की योजनाएं बनाते हैं । पर सरकार के कड़क कायदे कानूनों की वजह से उनकी ऐसी योजनाओं पर पानी फिर जाता है । आज कायदे कानून भी बेटियों के पक्ष में हैं, जिसमें उनको बेटों की तरह ही समान अधिकार प्रदान किए गए हैं।

बस अगर आज के समाज में कोई कमी है तो सिर्फ बेटियों की सुरक्षा की कमी है । आज प्रतिदिन बेटियों के बलात्कार एवं बलात्कार के पश्चात उनको जान से मार देने के किस्से समाचारपत्रों में छपते रहते हैं जो कि चिंता का विषय है । आज छोटी-छोटी बच्चियाँ भी सुरक्षित नहीं है । वासना के वहशी दरिंदों में इंसानियत नाम की कोई चीज़ ही नहीं बची है । वे इन मासूमों को भी अपनी हवस का शिकार बना देते हैं और फिर इन बेचारे मासूमों को मौत के घाट उतार देते हैं । ऐसे में अपनी बेटियों की सुरक्षा हेतु हम सभी को आगे आना होगा । ऐसी हैवानियत के विरुद्ध

सबको मिलकर लड़ना होगा और सरकार को भी अपने कायदे-कानूनों में सुधार करके अपने देश की बेटियों को सुरक्षित करना होगा और दोषियों को सख्त से सख्त सजा देकर इस जुर्म को कम करना होगा । बेटियाँ हमारी और हमारे देश की धरोहर हैं। जिन्होंने युगों से इस धरती पर संसार को आगे बढ़ाया है । बेटियाँ है तो जहान है । बेटियाँ सबसे महान हैं।

''मिलकर हम सभी को ये काम करना होगा, देश की बेटियों को सुरक्षित हर हाल में करना होगा, बुरी नज़र रखने वालों से बेटियों को बचाना होगा, बेटियाँ है अनमोल रत्न उनको संभालकर रखना होगा ।''

पथ का अंधियारा मिटाता चल

सुश्री मोनिका लोचानी
डेटा इंट्री ऑपरेटर, ईडीपी

पथ का अंधियारा मिटाता चल
स्वर्णिम उजियारा जगाता चल
यही फूल है कम, कांटे अनगिनत
तू अपना चाँद बचाता चल...
तू करता मेरा मेरा है
पर यहां न कोई तेरा है
है ये बाजार लुटेरों का
तू अपनी गांठ बचाता चल...
ये झिलमिल नगर बेगाना है,
यहां से तो एक दिन जाना है
अब वक्त है कम लंबी मंजिल
तू जल्दी पाँव बढ़ाता चल...

बचपन बीता, यौवन बीता
बीतते बीतते समय हो गया बीता
अब अन्त समझ पूँजी थोड़ी
तू अपने दाम बढ़ाता चल...
जो लगती सोने की इंद्री
वह सचमुच है खाली तो मिट्टी
तू भी कल तो होगा मिट्टी
निज टीके बंध छुड़ाता चल..
जब काल वालि आ जाएगा
तब कोई नहीं बचायेगा
उस पल जो तेरे काम आये
तू साथी उसे बनाता चल...
पथ का अंधियारा मिटाता चल..

चन्दा मामा

कु. श्रेया मिश्रा
सुपुत्री श्री मनोज मिश्रा
वरिष्ठ लिपिक, भंडार प्रभाग

चन्दा मेरा मामा, धरती मेरी मैया
धरती तेरी बहना तू उसका प्यारा भैया
मामा मेरे घर में आना माँ से तुम राखी बंधवाना
तारों की मोती बिंध-बिंधकर
सुन्दर सी .राखी बनवाऊं
सूरज की किरणों से चुराके
मस्तक पर लाली लगवाऊं
गंगाजल से खीर बनाकर

नन्हें कर से तुम्हें खिलाऊं
अपने मित्रों की टोली से
तुम्हें मिलाऊं और इतराऊं
मैया के ओ प्यारे भैया
संग ले आना करक की नैया
चाँदनी मामी का जी ललचाते
तुम्हें झील की सैर कराऊं ।

देश प्रेम

फ़ख्र है अपने भारत देश पर,
अपने भारतवासी होने पर,
अपने देश की पावन मिट्टी पर,
अपनी कला और संस्कृति पर,

कु. प्रतीक भावनानी
सुपुत्र श्रीमती ज्योति एन. भावनानी
सहायक, सा. प्र. विभाग

अपने देश पर अभिमान और अपने देश की मिट्टी से प्यार, यही तो जज़्बा है देशप्रेम का, जब सागर रूपी दिल में अपने देश के प्रति प्रेम की ऊँची लहरें उठती हैं तो अनायास ही सबसे पहले तो अपने देश पर फख्र महसूस होने लगता है। अपने देश से, अपने देश की हर एक चीज़ और स्थान से, अपने देश की परम्पराओं और संस्कृति से बेहद ही लगाव होता है। जिस इंसान के दिल में अपने देश के प्रति प्रेम होता है उसे दिल में अपने देश के प्रति सत्यनिष्ठा होती है, कर्तव्यनिष्ठा होती है तथा अपने देश के सुख और समृद्धि की चेष्टा होती है। उस इंसान के दिल में भाईचारे की भावना कूट-कूट कर भरी रहती है। अपने देश की समस्या खुद की महसूस होती है। देश से मिले अनेकों अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्तव्यों का बोध होता है। ऐसे इंसान को अपने फर्ज निभाने के लिए कुछ समझाने या बहाने की जरूरत नहीं होती है परंतु ऐसा व्यक्ति जिस के मन में देश प्रेम की ज्योति प्रकाशित होती है वह स्वयं ही फर्ज की राह पर चल पड़ता है। अपने देश में अमन और शांति बरकरार रखने के लिए जी-जान से कोशिश करता है। अपने देश की सुरक्षा के लिए वह सदैव सतर्क रहता है।

जहाँ देशप्रेम होता है वहाँ पर धैर्य और संतोष का भाव होता है। ऐसा व्यक्ति के मन में द्वेष और ईर्ष्या का भाव बिलकुल ही नहीं होता है। ऐसा व्यक्ति जिस हाल में भी होता है उस हाल में संतुष्ट रहता है। मन में संतोष का भाव होने से ऐसा व्यक्ति सदैव सच्चाई की राह पर चलता है। चाहे कुछ भी हो जाए परंतु वह सच्चाई को बिलकुल ही अपने से अलग नहीं करता है। जिसके फलस्वरूप उसके कदम सदैव सत्कर्म की राह पर ही चलते हैं।

देशप्रेम इंसान को जातिवाद और निजी स्वार्थ से दूर रखता है। ऐसा इंसान जिसे अपने देश से प्रेम होता है वह अपने देशवासियों से भी प्यार करता है। उसके मन में परोपकार की भावना होती है। अपने देशवासियों की तकलीफ और समस्या उसकी खुद की तकलीफ और समस्या बन जाती है जिसको हल करने के लिए वह सदा प्रयत्नशील रहता है। अपने देश और देशवासियों की रक्षा हेतु वह सदैव तैयार रहता है। बड़ी से बड़ी ताकत के आगे भी वह कभी नहीं झुकता है और अपने फर्ज की राह में वह अपनी जान की भी परवाह नहीं करता है। इतिहास इस बात का गवाह है जिसमें देश की आजादी हेतु देश के सच्चे देशभक्तों ने, बिना जातिवाद के, एक-दूसरे का साथ देकर स्वतंत्रता संग्राम में अपनी एकता का सबूत पेश किया था और अपनी जान की बाजी लगाकर देशप्रेम की मिसाल कायम की थी।

एक सच्चा देशप्रेमी सदैव अपने देश के हितों हेतु कार्यशील रहता है। अपने देश के आर्थिक एवं सामाजिक विकास हेतु वह अपना संपूर्ण योगदान देने हेतु सदैव तैयार रहता है। वह राष्ट्रीय सम्पति की सुरक्षा के लिए हमेशा जागरुक रहता है। वह कभी भी अपने देशवासियों और देश की सम्पति को नुकसान पहुँचाने के बारे में सोच भी नहीं सकता है। देश में दंगा-फसाद करने वाले तत्वों एवं जातिवाद के नाम पर देशवासियों के बीच फूट डालनेवाले तत्वों से न सिर्फ खुद दूर रहता है पर दूसरों को भी उनसे दूर रहने की सलाह देता है। अपने देश में शांति, व्यवस्था, राष्ट्रीय एकता बनाए रखने हेतु वह हर मुमकिन कोशिश करता है। अपने देश के कायदे-कानूनों का वह सदैव मान रखता है और उनका कड़ाई से पालन करता है।

एक सच्चा देश प्रेमी अत्यंत ही नेक और ईमानदार होता है। चाहे कैसी भी परिस्थिति हो, पर वह अपनी ईमानदारी से कभी भी टस से मस नहीं होता है। एक सच्चा देशभक्त भ्रष्टाचार तो कभी कर ही नहीं सकता है। ऐसा व्यक्ति रिश्वत, झूठ, दगाबाजी, मक्कारी, मिलावट, नशीली एवं हानिकारक चीजों के उत्पादन एवं वितरण, वित्तीय घोटालों इत्यादि राष्ट्र विरुद्ध गतिविधियों से कोसों दूर ही रहता है। वह हमेशा स्वदेशी एवं स्वभाषा का मान रखता है तथा उनके विकास हेतु सदैव ही प्रयत्नशील रहता है।

कल हो न हो...

कु. चिराग निहलानी
सुपुत्र श्रीमती आरती निहलानी
कनिष्ठ अभियंता (सिविल)

जब मेरे नैन मूंद-मूंद खुले
तब अर्श में एक चमकते सितारे को देखा
ख्वाब था, कि बस थम जाए जो पल
पर सूरज के उस गेरुए रंग ने
बनाई अफसून की रेखा
धीमे धीमे जब फलक और निखरा,
मानो नया एक दिन, एक नई उम्मीद थी।
क्या करूं कहाँ जाऊं, बस सोना ही सोना,
और एक पल से दूसरा पल यूँ ही बीतता चला गया।
पढ़ लिखने में खेल-कूद में एक जुस्तजू थी अपनी रुचि की,
पर ये ही भूल गया, क्या ये लाज़मी था भी या नहीं।
मैं पढ़ता गया आगे बढ़ता गया,
और कई पल यादों को बस यूं ही बिखेरता गया।
फिर जिस दिन खुद में मशरूफ़ था, तो एहसास हुआ
कि मैंने कुछ लम्हें खो दिये ।।

यहाँ मुझे अपना वजूद ढूंढ़ना था,
वहाँ किसी भीड़ में चल दिये।
शायद कुदरत का भी यही नियम है,
जहाँ दरिया है वहाँ चाहे कस्ती हो या रेत,
बस एक पल की ही बात है,
फिर उनका जाना कहीं निश्चित है ।।
अगर एक माहताब रात की ठंड लाता है
तो सुबह के सूरज की धूप आना भी निश्चित है ।।
इस रिवायत से रुह चले
तो हमें इक पल से भी (लगाव होगा) मुहब्बत होगी।
फिर चाहे मंजिल दूर क्यों ना हो
और अगर ये पल अलविदा कर गया फिर
क्या पता, कल हो ना हो !!!!

आओ हम किसान बन जाएँ...

श्रीमती शकीना के. कुंभार
अध्यापिका
भारतीय विद्या मंदिर, कंडला

आओ हम किसान बन जाएँ...देश में...
उल्लास और प्रेम की फसल उगाएँ।

सुगंध और भाईचारे की फसल बोएँ...
इसमें मिठास और संवेदना की खाद डालें।

नफरत और घृणा की निराई को निकाले...
समझदारी और साझेदारी का पानी पिलाएँ।

मानवीय विकास के लहलहाते खेत...
और हर चहरे पर मुस्कान भर-भर के लाएँ।

हर इन्सान की इच्छा और आकांक्षाएँ तथा,
महेच्छाओं से भरा सपना सच बनाएँ।

तुम आगे रहो, हम पीछे ही खड़े हैं,
देश और विश्व की सामाजिक विकास की नींव डाले।

चलो, खुशियों की दिवाली लाएँ...
नफरत और दुर्गुणों की होली जलाएँ।

दरारों के उस पार अपनी यादें....

श्रीमती संगीता खिलवानी
सहायक, सिविल अभियांत्रिकी विभाग

अम्मा आँगन में तुलसी के पौधे को पानी दे रही थीं। मैं नींद से उठकर दौड़ी और तुरंत जाकर अम्मा को पीछे से गले लगा लिया। ''हैपी बर्थडे अम्मा'' आज आप 85 बरस की हो गईं।

अम्मा ने खुश होकर मेरे सिर पर अपना हाथ फेरा और बोली ''जीती रह मेरी गुड़िया'' आज मैं अम्मा का पल्लू छोड़ने वाली नहीं थी इसलिए जैसे ही वे पलंग पर जाकर बैठीं मैंने फट जाकर अपना सिर उनकी गोद में रख दिया। मैंने उनके सामने जिद की कि आज वे मुझे काल्पनिक गुड्डे-गुड्डियों की नहीं अपितु उनकी खुद की कहानी सुनाएँ सिंध की। अम्मा अक्सर मुझे बताती रहती थीं कि पहले वे सिंध में रहती थीं। मेरे बहुत जोर करने पर अम्मा दु:ख को रोक न पाईं एवं मेरे बालों को सहलाते हुए मुझे बताने लगीं कि गुड़िया, सिंध की बातें किस तरह मैं बयान करूं। सिंध की मीठी व यादगार बातें बयाँ करना अर्थात् गाय को गुड़ खिलाना। स्वाद बयाँ करने के लिए शब्द ही नहीं...आह....कितना स्वादिष्ट...।

अम्मा का अंतरमन आज उभर आया था। अम्मा का जन्म सिंध के सखरपुर में नन्दीराम के घर में हुआ। अम्मा घर की सबसे छोटी बेटी थीं। सिंध में अम्मा ने अपने बचपन में खूब मजे किए। अपने अन्य सात भाई-बहनों की वे लाड़ली थीं। सतोलिया, चार-चौकड़ी, लुका-छुपी, चितचितामणी, गुल्ली-डंडा और वांझी के खूब मजे लिए। त्यौहारों पर पूरे परिवार के लिए एक ही कपड़े में से पोशाकें बनतीं। मोहल्ले के सारे बच्चे मिलकर खूब खूब धमाल-चौकड़ी मचाते। उस ज़माने में शरबत व बिस्किट बच्चों में लोकप्रिय हुआ करते थे। किसी में कोई छलकपट नहीं और ना ही कोई घमंड या दिखावा। न कोई तकरार, न द्वेष, न किसी से होड़ सब अपने जीवन में संतुष्ट थे वे कदम से कदम मिलाकर एक-दूसरे का साथ निभाते। खाने-पीने, हर चीज के मजे थे। उस दौर में अम्मा की माताजी एवं अन्य काकियाँ एक-दूसरे के घर इकट्ठा होकर चुटकियों में कभी पापड़ बनातीं कभी मूंग की बड़ियां, खीचे - मिठाईयाँ व नमकीन बनातीं। एक साथ बैठकर हंसी मजाक के साथ साथ कढ़ाई काम करतीं, स्वेटर बुनतीं। अम्मा के घर के आंगन में एक नीम का पेड़ था। अम्मा को उससे बेहद ही लगाव था। अम्मा अक्सर उसके साथ खेलतीं। उस पर झूला झूलतीं जैसे वह अम्मा का सबसे प्रिय मित्र हो। परन्तु...पता नहीं किसकी नज़र लग गई, अचानक हिन्दुस्तान - पाकिस्तान का विभाजन हो गया और सब सिंधी पूरे भारत में अलग-अलग जगहों पर बिखर गए। सिंध छोड़ते समय अम्मा अपने उस पेड़ से बिछड़कर खूब रोईं जैसे वह कोई सजीव इन्सान हो।

भारत आकर अम्मा के परिवार ने अपने गुज़ारे के लिए खूब संघर्ष किया व अपनी मेहनत के बलबूते भारत में अपने पैर जमाने में सफल हुए। धीरे धीरे सब बड़े हो गए व सबकी शादियां हो गईं। अम्मा की शादी भी आदीपुर में मेरे दादाजी के साथ हो गई जो पहले से ही उस परिवार के परिचित थे व आदीपुर (कच्छ) में जाकर स्थाई हुए थे। धीरे-धीरे अम्मा भी अपनी घर गृहस्थी में व्यस्त हो गईं परंतु सिंध की बातें, वो अम्मा का प्रिय पेड़, अक्सर अम्मा का दिल दु:खी कर देते, उनका मन भर आता। घर में सब सुख हो पर मन में सुख न हो तो सुख भी आखिर किस काम का ? खैर अम्मा ने परिस्थितियों से समझौता कर ही लिया था।

अम्मा से सिंध की बातें सुनते समय मुझे महसूस हो रहा था कि उनमे खूब उत्साह व उमंग भर आया है जैसे वे सिंध लौट गई हों मगर हकीकत में दोबारा कभी सिंध में जाने का सौभाग्य अम्मा को नसीब ना हुआ। कोई रिश्तेदार तो ना बचा था सिंध में पर काश अम्मा की अपने उस पुराने घर व अपने परम प्रिय पेड़ से ही मुलाकात हो जाती जिसकी विरह पीड़ा आज भी अम्मा के ज़ेहन में जिंदा है।

अम्मा ने बोला की सिंध की उनकी यादें अब उनके साथ ही जाएँगी। आह ! किसी मनुष्य का अपनी जन्मभूमि, अपने पेड़ से इतना लगाव, शायद किसी मनुष्य का मनुष्य से भी ना हो। काश ! मैं अपनी प्यारी अम्मा के अंतर्मन में दबी इच्छाओं को पूरा कर पाती।

आज की नारी

श्रीमती रानी कुकसाल
वरिष्ठ लिपिक, विद्युत प्रभाग

मेरी किलकारियों को अंगना में तुम खनकने दो,
मेरी नन्ही-सी पेंजनिया की सरगम को छनकने दो,
तुम्हारे आँचल की छैंया में पनपी एक बेला हूँ,
तुम इस कोमल कली को फूल बनकर महकने दो।

मैं पापा के पगड़ी में एक गुरूर का मोती बन जाऊं,
मैं माँ की आँखों का सुंदर सलोना स्वप्न बन जाऊं,
झगड़ते और मचलते प्यारे भैया की बला लेती,
मैं कोमल रेशम की डोरी में बिंधकर राखी बन जाऊं।

कभी विद्या की देवी शारदा बन कविता लिख जाऊं,
स्वावलम्बन की सीढ़ी चढ़कर देवी लक्ष्मी बन जाऊं,
शिवाजी भगतसिंह आजाद से वीरों को जनकर मैं,
यशोदा बनकर सृष्टि रचेता की मैं मैया बन जाऊं।

कभी सीता के रूप में अग्निपरीक्षा देती आई हूँ,
कभी गाँधारी बनकर सौ पूतों को जनती आई हूँ,
कभी पांचाली को पुरुषों ने द्यूतक्रीड़ा में हारा था,
कभी निर्भया के रूप में कौरवों से लुटती आई हूँ।

चुनरिया और हिजाब की परंपरा पर मैं इतराती हूँ,
विदेशी परिधानों में भी स्वयं को सहज बनाती हूँ,
कभी मैं रूपसी रम्भा कभी माँ काली दुर्गा-सी,
परिस्थिति के मुताबिक मैं स्वयं को ढाल जाती हूँ।

पर अब कर में कटार को धार समर में रणचण्डी आई,
जो अपने पंखों से इस अंतरिक्ष को मापकर लाई,
मुझे अबला समझने वाले बलशाली पुरुष सुन ले,
तुझे मैं कोमल गर्भ में नौ माहों तक धारती आई।

लास्ट बेंच

श्री महेश एम. खिलवानी
सहायक, नगर विकास स्कंध

अदाकार

संगीता – माँ – 44 साल
कृषा – बेटी – 10 साल

संगीता – स्कूल से आ गई मेरी बच्ची ?
कृषा – हां ममा, आ गई ।
संगीता – लगता है आज तुम कुछ भूल रही हो ।
कृषा – क्या ?
संगीता – ममा को किस्सी करना ।
कृषा – मेरा मूड खराब है ।
संगीता – ठीक है मूड बनने के बाद किस्सी करना ।
कृषा – मेरा मूड सच में खराब है ममा ।
संगीता – क्या हुआ, स्कूल में किसी से लड़ के आई है ?
कृषा – मॉम आज मेरा लास्ट बेंच पर बैठने का टर्न था ।
संगीता – हां, मुझे पता है । लास्ट बेंच यानी फुल ऑन मस्ती ।
कृषा – (उदास होकर) हां । पर मिस ने मुझे पहली बेंच पर बिठा दिया ।
संगीता – (हंस कर) यानी तुम्हारी मस्ती पर फुलस्टॉप लगा दिया ।
कृषा – वही तो । फर्स्ट बेंच पर बैठना यानी अपने मुंह पर ताला लगा लेना । मुझे बिल्कुल पसंद नहीं है, बोर हो जाती हूं मैं ।
संगीता – स्कूल पढ़ने जाती हो या मस्ती करने ।
कृषा – पर सभी बच्चे मज़े करते हैं, फिर मेरे साथ ही मिस क्यूं सख्ती करती हैं । मुझे डांटती रहतीं हैं । मैं तो हमेशा फर्स्ट आती हूं फिर भी ।
संगीता – मिस नहीं चाहती कि तुम्हें बुरी संगत का असर हो ।
कृषा – बुरी संगत । मैं समझी नहीं ।
संगीता – कहते हैं पानी की एक बूंद गरम तवे पर गिरे तो सूख जाती है, कमल के पते पर गिरकर मोती की तरह चमकने लगती है और अगर सीप के मुंह में गिर जाए तो मोती बन जाती है । पानी की बूंद वही है बस संगत का असर है ।
कृषा – ओह । ममा मैं समझी नहीं । आपका लेक्चर हिस्टरी के लेक्चर जैसा ही कठिन है ।
संगीता – बेटी, हमें अच्छे बच्चों से ही दोस्ती रखनी चाहिए । लास्ट बेंचर्स बनकर मस्ती करना ठीक नहीं । स्कूल में मन लगाकर पढ़ाई करेंगे तो ही बड़े होकर अच्छे और कामयाब इंसान बन पाएंगे । आया समझ में ?
कृषा – यस ममा, आपका यह लेक्चर मोरल साईंस की तरह ही सरल है, तुरंत समझ में आ गया । अब मैं स्कूल में मस्ती नहीं करूंगी। पढाई करूंगी और कामयाबी हासिल करूंगी ।
संगीता – बहुत अच्छा । चलो अब हाथ मुंह धो लो और खाना खाओ ।
कृषा – नो
संगीता – फिर क्या हुआ ?
कृषा – अब आप कुछ भूल रही हो ?
संगीता – क्या ?
कृषा – मेरी प्यारी किस्सी ।
(कृषा संगीता को किस्सी करती है । दोनों हंसते हैं ।)

सच्चाई की डगर

श्रीमती ज्योति एन. भावनानी
सहायक
सामान्य प्रशासन विभाग

सच्चाई की डगर चुनी है मैंने,
इस पथ पर आगे बढ़ती जाऊँ मैं,
अपने देश से प्यार किया है मैंने
उसके गुण हरदम गातीं जाऊँ मैं ।

मुश्किलों से डरना नहीं है मुझको,
अटल इरादों से कदम बढ़ाती जाऊँ मैं,
मुसीबतों से हारना नहीं है मुझको,
जीत का दृढ़ संकल्प लिए बढ़ती जाऊँ मैं ।

कोई साथ न दे फिर भी हमेशा,
अकेले ही पथ पर बढ़ती जाऊँ मैं,
पीछे मुड़ कर देखूँ न किसी को,
खुद पे भरोसा रखकर बढ़ती जाऊं मैं ।

एक दिन तो मंजिल मिलेगी मुझको,
इसी बात पर यकीन करती जाऊँ मैं,
इसी विश्वास को लेकर अपने साथ मैं,
अपनी मंजिल की ओर चलती जाऊँ मैं ।

एक-एक करके साथ छोड़ चले सब,
हर रिश्ते को आज़माती जाऊँ मैं,
आए हैं अकेले जाएंगे भी अकेले,
समझकर खुद को,
अपनी धुन में ही बढ़ती जाऊँ मैं ।

महामारी : एक प्रतिबिंब

श्रीमती रीना विसारिया रोशिया
वैज्ञानिक अधिकारी

सर्जनहार हमारा, कोई खास तो है,
महामारी से मुक्ति पाने की, कोई आस तो है,
सूर्यास्त हुआ है तो क्या, सूर्योदय का विश्वास तो है,
घड़ी मुश्किल है परंतु, विजय प्राप्ति के पश्चात पूरा आकाश तो है ।

सिसकियां उन बच्चों की सुनी नहीं जाती,
जो अपनी माँ को खोज रहे हैं ।
लाचारी उन माँ की देखी नहीं जाती,
जो अपने कलेजे के टुकड़ों को मिल नहीं पाती ।
उदासी उन बच्चों की देखी नहीं जाती,
जो अपने पिता को कभी देख नहीं पाएंगे ।
किसी के पालनहार बिछड़े, किसी की जननी,
तो किसी के मासूम फूल मुरझा गए ।

जिन्दगी में साथ निभाने वाले हमसफर चले गए,
प्यार निभाकर भी सारे वादे, सारी कसमें तोड़ गए,
न जाने कितने दिलों के टुकड़े, चकनाचूर हो गए,
वो लाल जोड़ा आज सफेद कर गए,
जो मेंहदी का रंग फीका कर गए
बुढ़ापे में माँ-बाप का सहारा चला गया,
वो आशा, वो प्यार, वो विश्वास,
वो उम्मीद, वो सब कुछ ले गया,
किसी का तो पूरा संसार ले गया ।

नया वर्ष, नया सवेरा...

श्रीमती आरती निहलानी
कनिष्ठ अभियंता (सिविल)

फितूर नहीं इस पर नए साल का
ये तो आके जाना है
बंदिश थी जो गुजरे लम्हों की
उसे नया जामा है पहनाना ।
यूँ तो आरंभ का अंत हो जाना,
या उसे सूर्य का अस्त हो जाना,
खिले फूलों का फिर मुरझाना,
वर्तमान का इतिहास बन जाना
और दर्द भूलकर सुख पहचानना
भी एक नया साल है ।

नया साल एक कासिद बनकर
जख्मों को कुछ यूँ भर पाया
बीते साल की धुंधली यादों को
शबनम के कतरों से नहलाया ।
कोरोना ने जो था कहर मचाया,
तुगलक बनकर सबको डराया,
अपनों का जो साथ छुड़ाया,
बच्चे-बूढ़े सबको रुलाया ।

लेकिन अब ऐसा लगता है,
बाहें पसारें आसना बनकर
वक्त ने भी नया रंग दिखाया
ना उम्मीद इन्सानों में वो,
फिर त्योहारों की खुशियाँ लाया
जुस्तजू थी जिस दीवानगी की
उन खुशियों के पैमाने लाया
डरा हुआ इन्सान जो था,
अब सूकुन भरी सुबह जी पाया ।
खुली बाँहों से स्वागत करे उस
ईश्वर का आधार है पाया ।
रहबर बनकर जिसने हम पर
प्यार ही प्यार है बरसाया ।

नया सवेरा नयी है सूरत
नये संकल्प विचार नये हो
नए साल का आगाज़ ऐसा हो
सबके लिए सुनहरा पल हो
सुख के चौक पूरे हर द्वारे
हर आँगन में सुख हरपल हो ।।

सावन आया, सावन आया...

सावन आया सावन आया ।
तीज त्योहार और खुशियां लाया ।।
बदरंग बने इस जीवन को
त्योहार से रंगने आया ।।
तीज चौथ या हो पांचम ।
सब त्योहारों ने हमें लुभाया ।।
सावन के संग जुला हो तो
नारी का मन और भरमाया
तीज की महेंदी और श्रृंगार ने ।
सजनाजी को खूब लुभाया ।।
बोड़ चौथ की महिमा न्यारी
गणुजी की पूजा प्यारी और
नागपांचम के संग, नारी की ये श्रद्धा न्यारी
छठ की तो क्या बात करें हम ।
व्यंजनों की भरमार है सारी ।।

लिखते-लिखते मुंह में पानी ।
लाती है ये स्वाद की माया ।।
मीठे व्यंजन भेल पूरी ने ।
बच्चे बूढ़े सब को लुभाया ।।
आठम के तो जश्न निराले ।
मटकीफोड़ ने मन है लुभाया ।।
नटवर गिरिधर और श्यामा संग ।
सखियों ने है रास राचाया ।।
झूमो नाचो मौज मनाओ ।
नंद यशोदा लाला है आया ।।
हाथी घोड़ा और पालकी में ।
कृष्ण जन्म जय घोष है छाया ।।
बरखा के संग सावन ने जो ।
रंग-बिरंगी मल्हार है गाया ।।

मुन्ना

श्रीमती रानी कुकसाल
वरि. लिपिक, विद्युत प्रभाग
दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट

गोरे रंग, घुंघराले बाल तथा ठंड से फटे गाल और हाथ-पैर वाला चार-पाँच साल का सुन्दर सा बच्चा बिना इलैस्टिक का निकर पहने प्लेटफॉर्म पर बेपरवाह घूम-घूमकर बरबस मेरा ध्यान अपनी ओर खींचा करता है। कभी बिस्किट का रैपर तो कभी प्लास्टिक का गिलास उसके मन बहलाव का साधन होते। कोई नहीं जानता कि इतना छोटा सा बच्चा इंदौर के इस प्लेटफॉर्म पर कहाँ से आया, किसका बच्चा है और इसके माँ-बाप जीवित भी हैं या नहीं। कोई दयावश इसे खाने को दे देता तो कोई दुत्कार कर परे हटा दिया करता। माँ-बाप, भाई-बहन इस समस्त नाते-रिश्तों से अनजान उस मासूम को तो यह तक नहीं पता कि वह जिस चीज़ को खा रहा है उसका नाम क्या है या रोज़ उसके सामने से दनदनाती हुई लाल सवारी आया जाया करती है उसे क्या कहते हैं। वह तो बस बालसुलभ आश्चर्य से उसे देखता और इसके रूकने पर उसके नज़दीक जाकर छूकर उसे परखने की कोशिश करता। कभी धूप से तपती ट्रेन से उसकी कोमल हथेली जल जाती तो झटके से हाथ हटा लेता और होंठ निकालकर रोआंसा हो जाता और अगले पल सब भूल दुनिया के किसी और अजूबे की तलाश में बढ़ जाता। ट्रेन का कोई मुसाफिर दयावश जूठा, बचाखुचा बासी खाना उसे थमा देता तो बिना यह जाने कि यह खाना खराब तो नहीं हो गया है वह चुपचाप उसे खा लिया करता।

मैं इंदौर के एक कॉलेज में प्राध्यापिका हूँ। मेरे पति देवास के प्रिंटिंग नोट प्रेस में लेखाकार हैं। नित्यप्रति देवास से इंदौर तक मैं ट्रेन से ही आवागमन किया करती हूँ।

एक रोज़ मैं ट्रेन में बैठी अखबार पढ़ रही थी। मेरे सामने की सीट पर एक दम्पति अपने आठ-नौ साल के बच्चे के साथ बैठे थे। बोलचाल पहनावे और बैठने के तरीके से वह महिला अपने फूहड़पन का परिचय दे रही थी। बच्चे ने भी अपनी शरारतों से सबकी नाक में दम कर रखा था। कभी ऊपर की सीट से लटककर किसी के सिर पर पैर की चोट लगा बैठता तो कभी किसी के सामान पर फ्रूटी गिरा देता। पिता बीच-बीच में अपने अंग्रेजी के ज्ञान को बघारते हुए बच्चे से कहते - नॉटी बॉय, सिट डाउन लाइक अ गुड बॉय। तभी बच्चे ने भूख की रट लगा दी। महिला ने अपने पति से कहा-दीदी ने पूरियाँ, आलू की सब्ज़ी और अचार दिये हैं। बबलू को भी भूख लग रही है चलिये नाश्ता निबटा लिया जाए। पति के हामी भरने पर महिला ने बैग से नाश्ता निकालकर सीट पर रख दिया। सब्ज़ी का तेल सीट की मालिश करने को बेताब था, अचार ने सारी पूरियों के साथ होली खेल रखी थी। मैं सरक - सरक कर खिड़की से चिपकी जा रही थी कि कहीं उस तेल ने हमसे रिश्तेदारी साधी तो सारा दिन कॉलेज में परफ्यूम की जगह अचारीलाल की खुशबू फैली रहेगी। अभी बच्चा पूरी सब्ज़ी खाने जा रहा था कि पिता ने रोकते हुए सूचित किया कि सब्ज़ी खराब हो गई है, उसमें बदबू आ रही है। अचार से पूड़ी खाने की हिदायत देकर वे सब्ज़ी फेंकने ही वाले थे कि पत्नी ने अपनी उदारता का परिचय देकर कहा - ''फेंकिए मत। कितनी मेहनत से बनाया है मेरी दीदी ने। अजी फेंकने से क्या फायदा अगर किसी के पेट में जाएगी तो दुआ देगा।'' उसकी ऐसी ओछी विचारधारा से मैं क्षुब्ध हो गई। मैंने उसे घूरते हुए देखा और कहा - ''मैडम, जिस सब्ज़ी को आप अपने बेटे को देने से घबरा रही हैं वही सब्जी आप किसी अन्य निरीह को कैसे दे सकती हैं ? क्या उस पर इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ेगा ? क्या उसके बीमार होने पर आपको दुआ मिलेगी ? अरे, अगर आप बीमार हो जाते हैं तो कम से कम दवा कराने में तो सक्षम हैं पर यदि कोई गरीब बीमार हो जाता है तो क्या वह सिवाय कराहने और तड़पने के कोई और उपाय कर सकता है ?''

उस महिला न आँखें तरेरते हुए कहा – ''हमारी बात कुछ और है हमने तो अपने बच्चे को नाज़ों से पाला है। इसलिए थोड़ी सी भी बासी चीज़ खाकर वह बीमार हो सकता है, पर इन गरीबों का क्या ? ये तो ताज़ी चीज़ को भी तब तक सम्भल कर रखते हैं जब कि तक वह खराब न हो जाए। ये तो बासी चीज़ खाने के आदी होते हैं।

खैर उसने थोड़ी सी बहस के बाद मुँह मरोड़ते हुए उस सब्ज़ी को खिड़की से बाहर फेंक दिया।

मैं आत्मचिंतन में डूब गई कि इन्सान कितना स्वार्थी जीव है, पुण्य बटोरकर परलोक संवारने की लालसा में वह इहलोक में ऐसे कृत्य करता है जो उसे पुण्य नहीं अपितु पाप का भागीदार बना देता है। वैसे मेरे अकेले के सोचने से क्या होता है। पता ही नहीं चला कि इस उधेड़बुन में कब ट्रेन इंदौर स्टेशन पर पहुँच गई। जब किसी के नन्हें हाथों ने मेरी नेल पॉलिश लगे लम्बे नाखूनों को कौतूहल से छुआ तब मेरी तंद्रा भंग हुई।

अरे मुन्ना !!! मन पुलक उठा। मैं नहीं जानती कि मानवीय संवेदनाओं में बंधी यह अनजानी डोर कब इतनी मजबूत हो गई। मुन्ना भी मुझे देखकर अपनी मूक खुशी का इज़हार कर रहा था। मैंने अपने पर्स से बिस्किट का पैकेट और चॉकलेट निकालकर उसे थमाया तो वह अपने छोटे-छोटे हाथों में उन्हें पकड़े तब तक खड़ा मुझे निहारता रहा जब तक मैं प्लेटफॉर्म से बाहर नहीं निकल गई। अब तो यह रोज़ का क्रम बन गया था। वह रोज़ाना मेरा इंतज़ार करता और मैं रोज़ उसे कुछ न कुछ खाने को दिया करती। मैं प्रेम से उसके सिर पर हाथ फेरती तो वह आँखें मूंद कर उस ममता के रस का प्रेमपूर्ण पान करता। मैंने उसे मुन्ना का सम्बोधन दिया था। वह कुछ बोलता नहीं था जिससे कभी-कभार यह भ्रम होता था कि कहीं यह गूंगा तो नहीं है। पर कुछ समय बाद वह मुझसे इतना घुलमिल गया तो मैं कॉलेज जाने से पूर्व उसके साथ बेंच पर बैठकर उसे अपने हाथों से कुछ न कुछ खिलाया करती। धीरे-धीरे वह मेरे और निकट आने लगा। कभी-कभी वह मेरी किसी बात को दोहराकर अपनी प्रतिक्रिया देने लगा जिससे उसके मूक-बधिर होने की मेरी आशंका समाप्त हो गई। मैं समझ गई कि जब उसे किसी ने सिखाया ही नहीं तो उसको शब्द ज्ञान होगा भी कहाँ से। अब तो घर पर भी उसकी याद मुझे बेचैन करने लगी। मैं सुबह का इंतज़ार करने लगी और सुबह जब मुन्ना को अपने सम्मुख पाती तो आनन्द विभोर हो जाती।

एक दिन मेरी ट्रेन समय से पन्द्रह-बीस मिनट पहले पहुँच गई तब मैं उसे वेटिंग रुम में ले गई और उसे नहलाकर नए कपड़े पहना दिये। मुन्ना के साथ-साथ वेटिग रुम में उपस्थित मुसाफिर भी मेरे ऐसा करने पर हतप्रभ थे। खैर इन सारी बातों से अनजान मैं ममता में सराबोर उस नन्हीं सी जान पर अपना प्रेम-पात्र उड़ेलने में व्यस्त थी। मैं यह सब अपने आत्मसुख की खातिर कर रही थी। किसी को दिखाने या रिझाने के लिए नहीं। जब मुन्ना नहा धो कर नए कपड़े में तैयार हो गया तो ऐसा लगा जैसे चन्द्रमा बादल की मलिन परत से बाहर निकल आया है। अब मेरे मन में खुशी की जगह भय ने घर कर लिया। इतना सुन्दर बच्चा तो किसी का दिल मोह लेगा। ऐसे में कोई इस बच्चे को चुरा तो नहीं लेगा ? कहीं किसी गलत व्यक्ति की नज़र तो नहीं पड़ जाएगी इस पर ? कहीं...नहीं नहीं मैंने उसे अपने हृदय से लगा लिया। भय मेरी आँखों से अविरल धारा बनकर बह निकला। मैं कैसे रह पाऊँगी इसे देखे बिना ? लोग मेरे पास आए मेरे कंधे पर हाथ रखा और पूछा उसके साथ आपका कोई रिश्ता है क्या? मैंने आँखों पोंछी और सिर हिलाकर ना कहा और उसका हाथ पकड़कर बाहर आई। बिस्किट दिया और बेंच के पास बिठा दिया।

अगले दिन सुबह जब मैं इंदौर पहुँची तो मुझे मुन्ना कहीं नज़र नहीं आया। मैं चारों ओर नज़रे दौड़ा-दौड़ा कर उसे ढूँढने लगी। मन विविध आशंकाओं से घिर गया। कहीं कल नए कपड़े में लिपटे मुन्ना को कोई उठा तो नहीं ले गया ? मासूम को पता न चला हो और वह प्लेटफॉर्म के नीचे पटरियों में या स्टेशन के बाहर रोड पर तो नहीं चला गया होगा ? नहीं, नहीं ऐसा कुछ नहीं हुआ होगा उस मासूम के साथ। मन ही मन मुन्ना की सलामती की दुआ मांगती मैं बेतहाशा प्लेटफॉर्म पर भटक रही थी। मैं भूल गई कि मुझे कॉलेज जाना है, मैं भूल गई कि जिसे मैं बदहवास ढूँढ रही हूँ उससे दूर-दूर का कोई नाता नहीं है मेरा।

लोगों से पूछा पर मायूसी ही हाथ लगी। हताश होकर मैं प्लेटफॉर्म के अंतिम छोर पर बनी बेंच पर बैठ गई तभी बेंच के पीछे से किसी छोटे बच्चे के कराहने की आवज़ से मैं चौंक पड़ी। मैंने हड़बड़ाकर पीछे देखा। मुन्ना मिट्टी में लेटा था। उसकी आँखें सूजकर बंद पड़ी थीं। उसमें उठने तक की ताकत न थी। मैंने लपककर उसे गोद में उठा लिया और अपने सीने से लगाकर बिलख पड़ी। मैं उसे गोद में लेकर स्टेशन के बाहर आई और रिक्शा में बैठकर अस्पताल पहुँची। डॉक्टर ने बताया कि बच्चा बुखार के कारण काफी कमज़ोर पड़ चुका है। इसे तुरन्त अस्पताल में भर्ती करना पड़ेगा। मैंने उसे भर्ती करवा दिया और उसके पास ही बैठी रही। मेरा मन उसकी उस दशा पर कतरा-कतरा रो रहा था। मैं कश्मकश में डूब गई। मैं उसे पुन: मरने के

उसी प्लेटफॉर्म पर नहीं छोड़ सकती । पता नहीं इसे घर ले जाने पर विपुल की क्या प्रतिक्रिया होगी । वैसे भी बिना पुलिस को इत्तला दिये किसी बच्चे को अपने घर ले जाना हितकर नहीं होगा । मैंने विपुल से सारी बात बताई । विपुल ने ढाँढस बँधाते हुए कहा ''चिन्ता मत करो मैं भी इंदौर आ जाता हूँ फिर देखते हैं क्या करना है । तुम वहीं अस्पताल में मुन्ना के पास रहो ।''

पति का सम्बल पाकर मैं आत्मविभोर हो गई । शाम को चार बज गए । विपुल भी पुलिस इंस्पेक्टर के साथ वहाँ आ गए। उन्होंने मुन्ना के सिर पर हाथ फेरा । मुन्ना भी शायद इस आत्मीयता को पहचान रहा था । उसने आँखें खोलीं और मुझे पास पाकर मुस्कुरा उठा ।

थोड़ी देर बाद डॉक्टर आए और कुछ दवाइयाँ मुझे थमाते हुए उन्हें खिलाने का तरीका समझाते हुए कहा कि अब बच्चा पहले से बेहतर है । रातभर शायद ओस में पड़े रहने के कारण इसकी तबीयत खराब हो गई थी । अब आप इसे ले जा सकते हैं पर अभी कमज़ोरी है इसीलिये उसका विशेष ध्यान रखना होगा । विपुल ने उसे गोद में उठाया । इंस्पेक्टर ने भी उन्हें सांत्वना देते हुए कहा कि आप घबराइये नहीं । इसे अपने साथ ले जाइये । आप अपना पता लिखवा दीजिए ताकि आवश्यकता पड़ने पर हम आपसे सम्पर्क साध सकें । विपुल ने अस्पताल के बिलों के भुगतान सम्बन्धी कार्रवाई की और कार में बैठ गए । आज मुन्ना के अचरज का ठिकाना नहीं था । सम्भवत: वह कार के अन्दर बैठकर पहली बार रफ्तार का आनन्द ले रहा था । भय और आशंका से वह मेरी गोद में सिमटा रहा ।

हमने मुन्ना को कानूनी तौर पर गोद ले लिया और उसे नया नाम दिया विशाल उपाध्याय । वह भी हमें मम्मी–पापा मानने लगा । हमारी बिटिया वैशाली भी अपने नए भाई को पाकर बेहद खुश है । कुछ ही दिनों में विशाल और घर के सभी लोग एक दूजे में समाहित हो गए । हे ईश्वर जिस प्रकार तूने मुन्ना को प्लेटफॉर्म की भीड़ भरी तनहाई से उबारकर एक स्नेह तथा अपनत्व भरा परिवार दिया उसी प्रकार प्लेटफॉर्म पर पड़े हर एक मुन्ने की तकदीर संवारकर उसे देश की तकदीर बना दे ।

पृष्ठ सं. 13 में दी गई ''शब्द पहेली'' के उत्तर
(उपयोग किए गए शब्दों की सूची)

अनुमोदित	मानदेय	अनुपालन	मिसिल	अर्जित
मामला	विचाराधीन	प्रबंधन	प्रचालन	अवधि
लागत	मसौदा	प्रस्ताव	स्वीकार	आवेदन
आहरण	कार्मिक	भुगतान	परियोजना	परिपत्र
प्रारूप	वरिष्ठ	शीघ्र	अग्रिम	कार्यान्वयन
आदेश	सांख्यकीय	लिपिक	वेतन	बकाया

निगोड़ी टीवी

श्रीमती रानी कुकसाल
वरिष्ठ लिपिक, विद्युत प्रभाग

निगोड़ी टीवी बड़ी कमाल, निगोड़ी टीवी बड़ी कमाल

1

दो प्रकार की नारी टीवी पर दिखलाई देती
एक प्रेम और दया धर्म का रूप अनोखा होती
दूजी से विष का प्याला नागिन को मिले उधार, निगोड़ी टीवी बनी बवाल

2

लिये अधर पर हाला जब झूमे रमणी मधुबाला
तब दद्दू के शिथिल हदय में धधकी धकधक ज्वाला
आँत-दाँत के बिना भी दद्दू कर गए बड़ा धमाल
बनी है टीवी बड़ी बवाल

3

नेता से नेता का नाता कोई बूझ न पाता
नेता से भिड़ता दिखता नेता कभी हाथ मिलाता
देश का कर रहे बंटाधार, बताती टीवी बड़ी कमाल

4

डोरीमान और शिंचैन को खूब सराहे लल्ला
तोंद धरे चश्मे से झांकता बैठा रहे निठल्ला
बालक्रीड़ा को गई डकार, निगोड़ी टीवी भई जंजाल

5

केबीसी पर आकर बच्चन पूछें सरल सवाल
कभी लगाते खूब ठहाका कभी करें मनुहार
पल में कर जाएं मालामाल, ओ भैया टीवी बड़ी कमाल

6

सास बहू का नाता मन को मोहे सबको भाता
साँप नेवला बनना उनके मन को नहीं सुहाता
ननद अब करे नहीं तकरार, कि बन गई टीवी बड़ी कमाल

राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी

धारा 3(3) के तहत आने वाले कागजात (ये कागजात द्विभाषी रुप में जारी किये जाएँ) :-

1. संकल्प (Resolution), 2. साधारण आदेश (General Orders) - [परिपत्र-Circular, कार्यालय आदेश - Office Orders, प्रशासनिक अनुदेश - Administrative Instructions इत्यादि], 3. नियम (Rules), 4. अधिसूचना (Notifications), 5. प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन (Administrative or other Reports), 6. प्रेस विज्ञप्ति (Press Communiques)-(सभी प्रकार के विज्ञापन/All Advertisements), 7. संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखी जानेवाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट (Administrative or other reports laid down before one house or both houses of the Parliament), 8. संसद के समक्ष प्रस्तुत किये जाने वाले सरकारी कागज-पत्र (Official Papers laid down before the Parliament), 9. संविदा (Contracts), 10. करार (Agreements), 11. अनुज्ञप्ति (Licence), 12. अनुज्ञापत्र (Permit), 13. सूचना (Notice), 14. निविदा-प्रारूप (Tender Forms)

महत्वपूर्ण नोट :

1. उपर्युक्त सभी दस्तावेज अंग्रेजी में जारी न किए जाएं बल्कि द्विभाषी अर्थात् हिंदी एवं अंग्रेजी में साथ-साथ जारी किए जाएं।
2. राजभाषा नियम 1976 के नियम-6 के अनुसार अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसे दस्तावेज हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार किए जाते हैं, निष्पादित किए जाते हैं और जारी किए जाते हैं।

:: क्षेत्रवार वर्गीकरण ::

'क्षेत्र क' : बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखंड, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र।

'क्षेत्र ख' : गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली।

'क्षेत्र ग' : ऊपर 'क' एवं 'ख' क्षेत्र के राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के अलावा अन्य सभी राज्य।

दिनांक 2 से 4 मार्च 2021 के दौरान मेरीटाइम इंडिया समिट–2021 का माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने उद्घाटन किया ।

मेरीटाइम इंडिया समिट–2021 में भाग लेते हुए दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री एस. के. मेहता जी ।

मेरीटाइम इंडिया समिट–2021 में सत्र को संबोधित करते हुए दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री एस.के.मेहता जी ।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

लहरों का राजहंस

21वाँ अंक
जनवरी, 2021 - जून, 2021

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

स्वच्छता है तो स्वास्थ्य है, स्वास्थ्य है तो समृद्धि है,
तो फिर आओ बनाएं मिलकर, स्वच्छ एवं स्वस्थ भारत ।

दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट ने अध्यक्ष श्री एस. के. मेहता और उपाध्यक्ष श्री नंदीश शुक्ल के कुशल नेतृत्व में वित्तीय वर्ष 2020-21 के दौरान भी 117.5 मिलियन मीट्रिक टन नौभार का प्रहस्तन कर नौभार प्रहस्तन के मामले में भारत के सभी महापत्तनों के बीच अपनी अग्रणी स्थिति को बरकरार रखा ।

दिनांक 02 जून 2021 को माननीय केंद्रीय पत्तन, पोतपरिवहन और जलमार्ग राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री मनसुख मांडविया जी ने दीनदयाल पोर्ट अस्पताल, गोपालपुरी में मेडिकल ऑक्सीजन कॉपर पाइपिंग नेटवर्क के साथ मेडिकल ऑक्सीजन जनरेटर यूनिट एवं अग्निशमन प्रणाली और ऑक्सीजन सिलेंडर बैंक के माध्यम से स्वचालित ऑक्सीजन स्त्रोत परिवर्तन प्रणाली का वर्चुअली उद्घाटन किया ।

दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट

(भारत का नं. 1 महापत्तन)